राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य 40.00 संख्या 420
कोलाहल
नागराज और
सुपर कमाण्डो ध्रुव का
मल्टीस्टार विशेषांक
जीतिए
लाखों रुपयों के उपहार। इस विशेषांक में है
नागराज मेगा कांटेस्ट का प्रवेश पत्र

Amaan
मैं यकीन नहीं कर पा रहा हूं कि मेरे साथ ऐसा हादसा घटा है। दो इंसानों ने... दो मामूली इंसानों नागराज और ध्रुव ने मुझे एक नहीं, दो नहीं, तीन बार मौत दी, और आखिरकार मेरे अमृत पिए शरीर को जीवन मरण के उस ज्वालामुखी में डाल दिया जहां पर एक पल के लिए मेरा शरीर जिन्दा होता है और दूसरे ही पल भस्म हो जाता है। फिर जीता है, फिर जल जाता है! मेरा शरीर नष्ट होने के समान ही है!
लेकिन मेरी आत्मा अभी भी मौजूद है। और आत्मा को कुछ भी नष्ट नहीं कर सकता! पर इस रूप में मैं मानवों से बदला नहीं ले सकता। अपने सीने में धधकती आग को बुझा नहीं सकता! नहीं मचा सकता इस दुनिया में मौत का...
© RAJA POCKET BOOKS
कोलाहल
संजय गुप्ता की पेशकश
कथाः जॉली सिन्हा
चित्रः अनुपम सिन्हा
इंकिंगः विनोदकुमार
सुलेख एवं रंगसज्जाः सुनील पाण्डेय
सम्पादकः मनीष गुप्ता
पूरा मजा उठाने के लिए पढ़ें: ड्रैकुला का हमला, नागराज और ड्रैकुला एवं ड्रैकुला का अंत
visit us at: www.rajcomics.com

और मेरे शरीर को नष्ट करने में सबसे अहम भूमिका निभाई थी मेरे ही जैसे एक प्रेत ने। एक गद्दार प्रेत गुण ने। और उस गद्दार प्रेत को ड्रैकुला के कहर का सामना करना ही पड़ेगा!
जिस लोक को मृत्युलोक कहते थे-
ड्रैकुला की आत्मा उस लोक में प्रवेश कर गई-
पृथ्वीलोक और परलोक के बीच में स्थित एक ऐसा लोक जहां पर वे प्राणी वास करते हैं जो पृथ्वी लोक तो छोड़ चुके, लेकिन अपनी इच्छाएं अधूरी रह जाने के कारण परलोक नहीं जा पाए-
बस, वहीं पर रुक जा ड्रैकुला! अब यहां पर तेरा राज नहीं रहा!
गुण! अच्छा हुआ कि तू खुद मेरे सामने आ गया, गद्दार!
तूने प्रेतों के खिलाफ इंसानों का साथ देकर महा अपराध किया है! इसके लिए तुम्हें अगले दो सौ साल चीलों और हुकों में लटककर बिताने होंगे!

तुममें अब ऐसा कर सकने की ताकत नहीं है ड्रैकुला! तुम्हारा शरीर तुम्हारी मुख्य शक्ति था, जो नष्ट हो चुका है। और तुम्हारी दूसरी शक्ति थी तुम्हारे सेवकों की संख्या जो अब बहुत कम हो चुकी है।
ध्यान से देखो ड्रैकुला! तुम्हारे सारे सेवक इस वक्त तुम्हारे पीछे नहीं, बल्कि मेरे पीछे खड़े हुए हैं। और वह इसलिए क्योंकि मेरी साथी आत्माओं ने तुम्हारी सारी गुलाम दुष्टात्माओं को अपने कब्जे में कर लिया है!
अब तुम्हारे साथ कोई भी नहीं है ड्रैकुला! अब तुमको हम सजा देंगे। उन जुल्मों की जो सदियों से तुम हम पर ढाते आ रहे हो!
इस भ्रम में मत रहना गुण! धरती पर मेरे वैम्पायरों की संख्या में चाहे कमी हो गई हो, लेकिन इस लोक में मेरे प्रेत सेवकों की संख्या में कोई कमी नहीं आई है! ड्रैकुला अभी भी यहां का राजा है!
ड्रैकुला को मरा जानकर सब पलट गए! सभी गद्दार बन गए!
लेकिन ड्रैकुला को कोई सजा नहीं दे सकता! सिर्फ ड्रैकुला के पास है सजा देने का अधिकार! तुम सबको सजा मैं दूंगा!

और इस बात का फैसला अभी और इसी वक्त होगा कि प्रेतों का नायक कौन है! मैं या कोई और!
है कोई जिसने अपने दुश्मन का खून पिया हो और जिसमें ड्रैकुला को चुनौती देने की हिम्मत हो...
तुमको तो इस वक्त एक मामूली सा प्रेत भी परास्त कर सकता है ड्रैकुला!
क्यों अपने नारकीय जीवन को और कष्टदायक बनाने पर तुले हुए हो!
बाकी सारे प्रेत खामोश हैं। क्योंकि ड्रैकुला के सामने प्रेतों की सिर्फ दुमें हिलती हैं, जबानें नहीं! एक तेरी जबान ही चल रही है गुण! यानी तू अपने आप ही प्रेतों का नायक बन गया है!
लेकिन ऐसा नहीं होगा! प्रेत नायक बनने के लिए तुझे मुझको हटाना पड़ेगा! मेरी चुनौती स्वीकार करनी पड़ेगी!
मैं शक्तिहीन प्रेतों से नहीं लड़ता ड्रैकुला!
तू डर गया है! ड्रैकुला से डर गया है तू! अरे, तेरे पास तो अब सभी सद्आत्माओं और दुष्टात्माओं की शक्ति है! फिर भी तू एक अकेले शक्तिहीन ड्रैकुला से डर रहा है! थू है तुझ पर गद्दार!
तेरी शक्तियां तो नागराज और ध्रुव ने नष्ट कर दी हैं! लेकिन तेरा घमण्ड मुझे ही नष्ट करना होगा! आ ड्रैकुला, सामना कर गुण का!
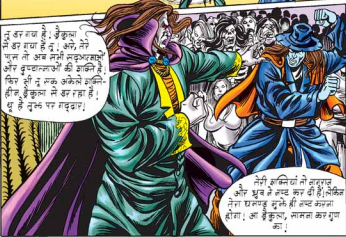
दो शक्तिशाली आत्माओं के टकराने से मृत्युलोक में भी खलबली मच गई-
मैंने बहुत बड़ा खतरा मोल ले लिया है! इस हालत में मेरा गुण से जीत पाना बहुत मुश्किल है। लेकिन मेरे पास इसके अलावा और कोई चारा भी नहीं है! मुझे गुण को हराकर प्रेतों पर फिर से अपनी सत्ता कायम करनी ही होगी! वर्ना मेरा सदियों से बनाया हुआ आतंक मिट जाएगा! और उसके साथ-साथ मानवों से बदला लेने का मौका भी मेरे हाथों से निकल जाएगा!
घ ट प
घ ट
आज उसी प्रेत मंडली के सामने मैं तुझे तेरे पापों की सजा दूंगा ड्रैकुला, जिनको तेरे आतंक ने आज तक इतना डराकर रखा था कि वे तेरे जुल्मों को चुपचाप सहते रहने पर मजबूर थे!
आज के बाद तेरी आत्मा कभी आजादी से घूम नहीं पाएगी! अब अनंत काल तक तुझे कैद में रहकर भीषण यंत्रणा सहनी होगी! ...

आह! ये जंजीरें मुझे बहुत कष्ट दे रही हैं! लेकिन मुझे ऐसा दिखाना होगा जैसे मुझ पर इनका कोई असर ही नहीं हो रहा है!
क्या यही सदियों पुराने वार हैं तेरे पास, गुण? जंजीरें ड्रैकुला को बांधकर नहीं रख सकतीं!
लेकिन ये तुझे जरूर बांध सकती हैं! जानना चाहता है कैसे?
देख, ऐसे!
कुछ ही पलों बाद अपनी ही जंजीरों से बंधा गुण लटका हुआ था-
अब बता! किसने किसको सजा दी है?
तुम उस बच्चे की तरह खुश हो रहे हो ड्रैकुला, जो पत्थर से एक बोतल को फोड़कर अपने-आपको निशानेबाज समझने लगता है!
अरे, जिन जंजीरों को मैंने ही बुलाया है, वे मेरा कहना मानेंगी या तेरा?

गुण के इशारे पर चेन की कड़ियां अपने आप खुलती गई-
और ड्रैकुला को अपने शिकंजों में कसती चली गई-
आऽऽऽह! मैं इनसे भी जल्दी ही आजाद हो जाऊंगा, गुण!
ऐसी कौन सी कैद पैदा कर दी है तूने गुण?
मैंने पैदा नहीं की, बल्कि नर्क लोक से खास तुम्हारे लिए आयात करवाई है ड्रैकुला!
देख अपनी कैद को!
फिर तुझे ऐसी आऽऽऽह ऐसी सजा दूंगा... जो नर्क में भी यमराज ने किसी... को... आऽऽह... नहीं दी होगी!
इन शिकंजों से तुम शायद आजाद हो जाओ ड्रैकुला, लेकिन ये शिकंजे तुमको जिस चीज से बांधने जा रहे हैं, उससे तुम कभी आजाद नहीं हो सकते...

घूर्ण स्तंभ को!
आऽऽऽह! तू वाकई बहुत शक्तिशाली हो गया है गुरु! शायद मुझसे भी ज्यादा शक्तिशाली!
मेरी तारीफ तुझको बचा नहीं पाएगी ड्रैकुला! अब यह घूर्ण स्तंभ तुझको पेंच की तरह घुमा-घुमाकर धीरे-धीरे नर्क की तरफ ले जाएगा! दो-तीन सौ सालों में तुम नर्क तक पहुंच ही जाओगे! तब तक यह घूर्ण स्तंभ तुझको यंत्रणा दे-देकर, नर्क में मिलने वाली सजाओं को झेलने के लिए तैयार कर देगा!
अगर मुझको नर्क में जाना ही होता तो मैं मृत्यु-लोक में आत्मा बनकर न भटक रहा होता!
नर्क में मैं जरूर जाऊंगा! लेकिन अभी नहीं! जब भी जाऊंगा तेरी आत्मा को खाकर जाऊंगा!

अपने बड़े- बड़े दावों के बावजूद ड्रैकुला नर्क के रास्ते पर रवाना हो चुका था-
पाप और आतंक का राज पृथ्वी के साथ-साथ मृत्युलोक से भी समाप्त हो गया है! खुशियां मनाओ!
झूठ के पैर चाहे छोटे होते हों, लेकिन पाप की उम्र बड़ी लंबी होती है-
पृथ्वी पर- समुद्र के नीचे स्थित उस ज्वालामुखी में एकाएक हलचल शुरू हो गई थी-
जिसके अंदर ड्रैकुला का शरीर लगातार बन रहा और भस्म हो रहा था-
ज्वालामुखी फटा-
और लावे के साथ-साथ ड्रैकुला का शरीर भी कुछ पल के लिए ज्वालामुखी से बाहर आ गया-
और पृथ्वी पर अपने शरीर का फिर से बनना शुरू होते ही मृत्युलोक में ड्रैकुला की आत्मा भी शक्तिशाली होने लगी-

ड्रैकुला के लिए इतनी शक्ति ही बहुत थी उस कैद से छुटकारा पाने के लिए-
पहले घूर्ण स्तंभ के बंधन टूटते चले गए-
और उसके बाद गुण की बारी थी-
तुम... तुम घूर्ण स्तंभ से आजाद कैसे हो गए ड्रैकुला?
खैर, आजाद हो गए हो तो ज्यादा देर तक आजाद नहीं रहोगे!
इस बार तुमको एक ऐसी स्थायी कैद में रखने का प्रबंध करूंगा, जिससे तुम कभी बाहर नहीं आ पाओ!
आऽऽऽह! मैं फिर मात खा रहा हूं। मेरी शक्ति फिर से गायब हो गई है। पर क्यों?
ड्रैकुला की शक्ति आने और जाने का कारण था-

ज्वालामुखी के लावे के साथ बार-बार ड्रैकुला के शरीर का ऊपर उछलना और फिर ज्वालामुखी के लावे में समा जाना-
लेकिन कुछ ही पलों के लिए मिल रही शक्ति भी ड्रैकुला के लिए बहुत थी-
इस तरह से ड्रैकुला का शरीर कुछ पलों के लिए बनकर उसकी आत्मा को शक्ति देता था-
और फिर लावे में गिरकर भस्म हो जाता था-

ड्रैकुला का वह वार गुण के हौसले पस्त करने के काफी था-
पृथ्वी पर उस ज्वालामुखी की हलचल समाप्त हो चुकी थी! ड्रैकुला का शरीर आखिरी बार लावे के दरिया में डूब चुका था-
ड्रैकुला की एक शक्ति समाप्त हो चुकी थी-
लेकिन गुण की हार के साथ-साथ लाखों प्रेतों की स्वामिभक्ति की ताकत ड्रैकुला को फिर से मिल चुकी थी-
ड्रैकुला की आत्मा एक बार फिर प्रेतों की नायक बन चुकी थी-
अब तू सदियों तक ऐसे ही तड़पता रहेगा, गद्दार गुण! और साथ ही इंसानों को तड़पता हुआ देखेगा! क्योंकि अब ड्रैकुला पृथ्वी पर कोलाहल मचाकर अपने गुलाम प्रेतों की संख्या में वृद्धि करने जा रहा है!
नहीं, ड्रैकुला! तू हमारा नायक नहीं बन सकता!

कौन ?
वोर्डेलो !
हां, ड्रैकुला! जिसका शरीर नहीं हो, वह आत्मा, प्रेत नायक नहीं बन सकती! अगर ऐसा हो सकता तो सदियों से तू नहीं, मैं प्रेतों का सरदार होता! अगर तुझको मेरी बात पर एतराज है तो हम इस मामले को अभी यहीं पर लड़ कर सुलझा सकते हैं!
मेरा और तेरा झगड़ा आज से नहीं, तब से चला आ रहा है, जब मैं और तू जिन्दा इंसान थे, आत्मा नहीं! लेकिन मैंने तुझको तब भी मात दी थी, और अभी भी दे सकता हूं!

इस संबंध में जानने के लिए पढ़ें: विध्वंस

भयानक टकराव था वह! दो अत्यंत शक्तिशाली दुष्टात्माएं एक-दूसरे से टकरा रही थीं-
एक के साथ अपने गुलाम प्रेतों की वफादारी की ताकत थी-
तो दूसरे के पास अपने स्वामिभक्त सैनिकों की भक्ति की शक्ति-

न ड्रैकुला की शक्ति बोर्डेलो पर हावी हो पा रही थी, और न ही बोर्डेलो, ड्रैकुला को मात दे पा रहा था-
ऐसी स्थिति में इस युद्ध का एक ही नतीजा हो सकता था-
मुकाबला बराबरी पर छूटना-
हफ़! हफ़! ऐसे न तो मैं तुमसे जीत पाऊंगा और न ही... हफ़... तू मुझे मात दे पाएगा!
फिर कैसे होगा... हफ़... प्रेतों के महानायक का फैसला?
बगैर लड़ाई के कोई हल निकालना होगा! ... हफ़!
वैसे... हफ... एक तरीका मेरी समझ में... हफ़... आ रहा है!

कहानी 19 पेज से जारी

वो तरीका भी बोलकर देख ले, ड्रेकुला!
देख बोर्डेलो!
अभी न तो तेरे पास शरीर है और न ही मेरे पास! हम अपने-अपने शरीरों को ढूंढ़कर हासिल करने की कोशिश करते हैं!
इसके लिए हम दस दिनों की अवधि तय करेंगे! जो पहले अपना शरीर ढूंढ़कर ले आएगा, वही प्रेत नायक बनेगा!
अरे वाह! तुझे तो पता है कि तेरा शरीर कहां पर है। लेकिन मेरा सारा समय तो वह जगह ढूंढ़ने में ही लग जाएगा जहां पर मेरा शरीर है!
ऐसा नहीं है बोर्डेलो। मेरा शरीर ज्वालामुखी के अंदर गिरा तो जरूर था!
लेकिन अब वह लावे की लहरों में बहकर धरती के किस कोने में पहुंच गया होगा, ये मुझे भी नहीं पता!
ठीक है! मुझे तेरी योजना मंजूर है! मैं और मेरे सैनिक तो चले अपना-अपना शरीर ढूंढ़ने के लिए!
ये आपने कैसी शर्त रख ली मालिक! आप भला लावे की नदी में अपने शरीर को कैसे ढूंढेंगे, और उसे कैसे हासिल करेंगे?
मैं ऐसा नहीं कर सकता! मुझे किसी की मदद लेनी होगी। और नागपाशा के शरीर में रहकर मैं ऐसे कुछ शक्तिशाली इंसानों का पता जान गया हूं जो कि ऐसा कर सकते हैं!
क्या आप नागराज और ध्रुव की बात कर रहे हैं?
नहीं! उनके तो आस-पास फटकना भी खतरनाक है! लेकिन उनके जैसे और भी शक्तिशाली सुपर हीरोज हैं!

उनमें से ही किसी को अपना काम करने के लिए मजबूर करना पड़ेगा!
लेकिन अगर नागराज और ध्रुव को भनक लग गई तो वे आपका काम खराब करने के लिए आ धमकेंगे!
सही कहा! इस मामले में वे मुझसे भी बड़े शैतान हैं! उनको उलझाए रखने के लिए कोई खास इंतजाम करना पड़ेगा!
और ऐसा एक बहुत खास इंतजाम मेरे पास है!
महानगर में- सभी तनाव मुक्त थे-
सिवाय लोरी के-
अब साधना करनी छोड़ो लोरी, और रुमानिया जाकर ड्रैकुला के किले को संभालो!
आखिर वह अब तुम्हारा किला है!
मैंने ड्रैकुला के ज्वाला-मुखी में गिरने के बाद भी उसकी 'पाप तरंगों' को महसूस किया है!
खतरा अभी दूर नहीं हुआ है, ध्रुव!
वह कोई न कोई वार जरूर करेगा! और जल्दी ही करेगा!
उस वार के इंतजार में हम बैठे तो नहीं रह सकते न! फिलहाल तो मुझको राज-नगर जाकर अपना छूटा हुआ काम संभालना है!
क्योंकि राजनगर जाने वाले सर्पों की तरफ से मेरे सर्प खतरे के संकेत भेज रहे हैं! भीषण खतरे के संकेत!
अभी तुम्हारा जाना जरा मुश्किल हो सकता है, ध्रुव!
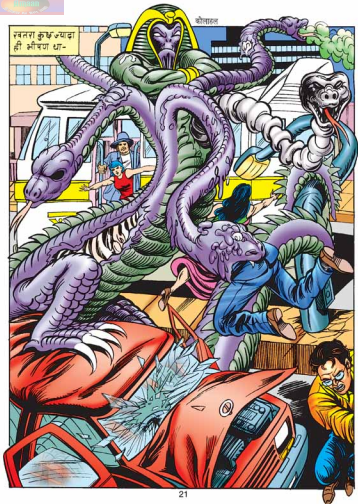
खतरा कुछ ज्यादा ही भीषण था-

और इस मुसीबत के तबाही फैलाने का कारण, नागराज और ध्रुव को समझ में नहीं आ रहा था-
ये कैसा सांप है, नागराज? इसका तो पूरा शरीर सड़ा-गला है, और इसके एक दो नहीं, पांच-पांच अतिरिक्त सिर हैं!
पता नहीं ध्रुव! ऐसा सांप मैंने न तो पहले कभी देखा है, और न ही इसके बारे में कुछ सुना है!
इसकी मुझसे तो दुश्मनी हो ही नहीं सकती! इसको जरूर, किसी ने भेजा है!
और इसको किसने भेजा है, ये बात सिर्फ इसी से पता चल सकती है!
नागराज उस विनाशकारी नाग से भिड़ने के लिए आगे बढ़ा-
लेकिन अगले ही पल उसको पीछे हटना पड़ा-
आऽऽऽ ह!
हिस्स
तुम ठीक तो हो न, नागराज?
थोड़ा, थोड़ा ध्रुव!
इस सर्प में अद्भुत विष है! इसके विष की तीव्रता मेरे विष के टक्कर की है!

यानी अगर मैं इसकी फुंकार नहीं झेल पाया तो ये भी मेरी फुंकार से विचलित जरूर होगा!

नागराज की फुंकार से वह विनाशकारी नाग तड़प उठा-

और यह समझ भी गया कि इस दुश्मन को रास्ते से हटाना होगा-

उसके सर्पों में एक हड़ीला नागराज की तरफ लपका-

और अगर किस्मत से वह उड़ती चिड़िया बीच में न आ गई होती-

तो नागराज का भी चिड़िया जैसा ही हाल होता-

ओह! इसके हड़ीले सर्प का सिर्फ स्पर्श ही जीवित वस्तु को कंकाल में बदलने के लिए काफी है!

संभलकर, नागराज! इसके एक फन में ये शक्ति है तो इसके दूसरे फनों में कोई दूसरी शक्ति होगी।
नागराज पहले ही अपनी जगह छोड़ चुका था-
लेकिन दूसरे फन से निकली विस्फोटक ज्वाला ने उसको दुबारा कहीं पर हाथ जमाने का मौका नहीं दिया-
HOM
लेकिन नागराज नीचे भी नहीं गिरा-
क्योंकि धमाके ने नागराज के होश कुछ पलों के लिए छील लिए थे-
ओह! इस सर्प ने नागराज को कुंडली में कस लिया है। इससे पहले कि हड्डीले सर्प का स्पर्श नागराज को कंकाल बना दे, मुझे कुछ करना होगा! पर क्या करूँ मैं? क्या करूँ?
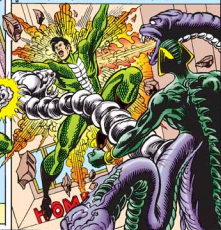
इतने शक्तिशाली दुश्मन से निपटने के लिए ध्रुव अपने पूरे दिमाग का इस्तेमाल कर रहा था-
ये बस, इस नाग को हराने में शायद मेरी मदद कर सके!
लेकिन वक्त तेजी से गुजर रहा था। हड्डीले सर्प का फन, नागराज के शरीर से कुछ ही इंचों की दूरी पर था-
क्योंकि वह भयानक सर्प अपना संतुलन खोकर नीचे आ गिरा था-
थैंक्स ध्रुव! लेकिन ये कमाल तुमने किया कैसे?
लेकिन तभी- नागराज पर लिपटा हुआ शिकंजा खुल गया-
मैंने बस के सारे डीजल को इस सर्प के नीचे गिरा दिया। और डीजल से सड़क चिकनी होते ही यह सर्प जमीन पर अपनी पकड़ बनाए नहीं रह सका और नीचे आ गिरा!

तुमने मुझे बचाने के साथ-साथ इस नाग को खत्म करने का रास्ता भी तैयार कर दिया है ध्रुव!
डीजल सिर्फ चिकना ही नहीं...
...ज्वलनशील भी होता है!
देखते ही देखते आग की लपटों ने सर्प के सड़े-गले शरीर को अपनी आगोश में ले लिया-

और-
ये तो कमाल हो गया नागराज! इतना बड़ा सांप देखते ही देखते ऐसे जल गया कि हड्डियों तक साबुत नहीं बचीं!
तंत्र प्राणियों का ऐसा ही हाल होता है, ध्रुव!
लेकिन आज तक हमने किसी दुश्मन को इतनी आसानी से नहीं हराया होगा!
बस, एक बात नहीं पता चल सकी! और वह ये कि इस सर्प को किसने भेजा था, और क्यों भेजा था।
इतना अफसोस मत करो नागराज! इस बार जब उस सर्प से मुलाकात हो तो पूछ लेना कि उसको किसने भेजा है!
सॉरी! तुम जरा देर से आई हो...
मैं फिर आ रहा हूं! इंतजार करो!
...वह सर्प मर चुका है! अब मेरी उससे दुबारा मुलाकात नहीं होगी।
ऐसा तुम समझते हो, नागराज!
ऊपर देखो!
हे भगवान! यानी... यानी खतरा अभी टला नहीं है!
हम उस सर्प के वापस आने का इंतजार करेंगे! लेकिन वह हमारे साथ ऐसा खेल क्यों खेल रहा है?

वह इसलिए ताकि ये दोनों हमेशा आने वाली मुसीबत का इंतजार करते रहें और मेरे मामले में अपनी टांग अड़ाने के लिए न आ पाएं!
अब चलो, सिंदोरी! मुझे अपने शरीर को पाने का इंतजाम करना है!
लेकिन आपके शरीर तक भला कौन पहुंच सकता है?
जो काम तंत्र-मंत्र और आत्मा की शक्तियां नहीं कर सकतीं, वह विज्ञान की शक्ति कर सकती है!
और मैं विज्ञान की शक्ति के द्वारा काम करने वाले एक सुपर हीरो को जानता हूं!
वह करेगा मेरा काम!

"उसको दिल्ली की छत- 'परमाणु' कहते हैं। आज के जमाने में नाम भी न जाने कैसे- कैसे रखते हैं-"
ये ही वो क्लाइंबर गैंग है, जिसको पकड़ने में मुझे तुम्हारी मदद चाहिए, शीना!

मैं जब भी इनको पकड़ने की कोशिश में इन पर परमाणु वार करता हूं, या इनके पास भी जाता हूं तो ये मुझ पर एक अजीबो-गरीब लेजर बीम का वार करते हैं, जो मेरी परमाणु पॉवर को अनियंत्रित कर देता है और मैं इनको पकड़ नहीं पाता!
मैं तुम्हारी मदद कैसे कर सकती हूं, परमाणु?
मैं इनको पकड़ने जा रहा हूं। ये फिर से मुझ पर लेजर बीम का वार करें तो तुमको दूर से ही धमाका करके वह यंत्र इनके हाथों से गिरा देना है! बाकी मैं देख लूंगा!
आहा! आ जा, आ जा परमाणु! तू फिर से पिटने के लिए आ गया!
ओ.के. परमाणु!
ऐसा ही होगा! तुम कहो तो इस पूरे गैंग को ही धमाकों से उड़ा दूं!
नहीं, शीना! हमको किसी की जान नहीं लेनी है!
अच्छा किया! क्योंकि जितना तुझको पिटने में मजा आता है...

उतना ही मजा हमको तुझे पीटने में आता है!
ओह! मेरी शक्तियां फिर से अनियंत्रित हो रही हैं!
इन्होंने बहुत फुर्ती से मुझ-पर वार कर दिया!
शीना को अपने मानसिक धमाके करने का मौका ही नहीं मिल पाया! मुझे इसबार अपनी शक्तियों को पूरा जोर लगाकर नियंत्रित करना होगा!
पर ऐसा मैं करूंगा कैसे?
ओफ्फ!

ओफ़! परमाणु क्या सोचेगा? वह मुझको मदद के लिए लाया और मैं समय रहते वार नहीं कर पाई! पर मैं भी क्या करूं? आज तक मैंने बड़े-बड़े निशानों पर धमाके किए हैं! हाथ में थमी लेजर गन जैसी छोटी चीज पर मैंने आज तक निशाना नहीं लगाया है! कंसेन्ट्रेट करो, शीना, कंसेन्ट्रेट करो!
ओह, नो! पहला वार निशाना साधकर किया और उसके बीच में परमाणु आ गया! अब मैं परमाणु की सीख पर नहीं चलूंगी! अगर परमाणु की जान बचानी है...
... तो मुझको अपने तरीके से वार करना होगा! बड़े निशाने पर!
इस बार शीना के वार ने -
आऽऽह!
उसके उस हाथ को ही उखाड़ दिया, जो गन को थामे हुए था-

कहानी 35 पेज से जारी

आऽऽऽह! मेरा हाथ! मेरा हाथ!
लेकिन लेजर गनें अभी और भी थीं-
और परमाणु को अभी भी पूरी तरह से अपने ऊपर नियंत्रण पाना बाकी था-
इस बार दो धमाके हुए-
पहले धमाके ने रस्सी को ही तोड़कर लेजर गन का निशाना बिगाड़ दिया-
और दूसरे धमाके ने परमाणु को अपनी तरफ बढ़ती लेजर बीम के रास्ते से दूर फेंक दिया-
अगर परमाणु ने उस पल अपने ऊपर पूरी तरह से नियंत्रण नहीं पा लिया होता, तो दोनों लुटेरे अपनी सारी हड्डियां तुड़वा बैठे होते-
ओह! बाल-बाल बच गए ये गुंडे! शीना से मुझे थोड़ी ज्यादा समझ बूझ की उम्मीद थी!
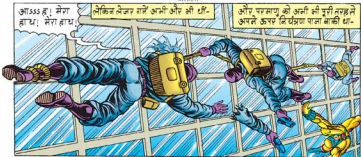
और फिर-
थैंक्स, शीना! लेकिन मुझे ये उम्मीद नहीं थी कि मेरी मदद करते-करते तुम इतनी बेकाबू हो जाओगी!
शुरुआत में तो मैं अच्छे मूड में थी। लेकिन फिर तुमको मुसीबत में देखकर मेरा दिमाग घूम गया!
तुम्हारा बाल भी बांका हो, ये मुझे बिलकुल बर्दाश्त नहीं है!
आई लव यू परमाणु!
इसीलिए मैं बाल रखता ही नहीं, शीना!
ताकि न तो मेरा बाल-बांका हो और न ही मुझे गुस्सा आए!
यही हमारा शिकार है सिधौरा, और यह लड़की हमारे शिकार की कमजोरी है।...
शिकार को काबू में करने का काम शुरू कर दो!

खैर चलो! जो मैं चाहता था वह हो गया! तुम्हारी मदद से मैंने क्लाइंबर गैंग को पकड़ लिया है! अब बस इनको जेल पहुंचाना बाकी है! वह काम मैं कर दूंगा! अब तुम सीधे घर जाओ!
अरे!
अब क्या हो गया?
ये कटा हुआ हाथ तो एम्बुलेंस वाले यहीं पर भूल गए! अब इस कटे हाथ को उस घायल गुंडे के शरीर से कैसे जोड़ा जाएगा?
कोई बात नहीं! मैं पहले इस हाथ को अस्पताल पहुंचाता हूं, और फिर वहीं से पुलिस स्टेशन चला जाऊंगा!
लेकिन उस हाथ को उठाने की जरूरत नहीं पड़ी-
फिर ये चमत्कार कैसे...?... आह!
लेजर बीम का निशाना इस बार शीना थी-
क्योंकि वह हाथ अपने आप ही हवा में उठ रहा था-
ये... ये क्या हो रहा है, परमाणु? क्या ये तुम कर रहे हो?
नहीं, शीना! मैं कुछ नहीं कर रहा!
और इस बार-

शीना की शक्तियां अनियंत्रित होने वाली थीं-
चारों तरफ धमाके ही धमाके होने लगे-
ये... ये क्या हो रहा है? ये काम तो क्लाडबर गैंग वालों का नहीं हो सकता!
हमारी जान तो खुद ही खतरे में है! हमको खोलो और भागने दो!
शटअप! अब मुझको वह काम करना पड़ेगा जो मैं कभी करना नहीं चाहता था! मुझे शीना पर वार करना होगा!
वड़ूम
परमाणु ब्लास्ट के उस वार ने-

शीना के होशो हवास छीन लिए-
ओफ! अब मुझको इस हाथ के साथ-साथ शीना को भी अस्पताल पहुंचाना होगा!
हे भगवान, इसको बस ज्यादा चोट न लगी हो!
लेकिन परमाणु का डर बेबुनियाद था-
क्योंकि दोनों गुंडों को पुलिस स्टेशन पहुंचाकर जब परमाणु अस्पताल लौटा तो-
चिन्ता की कोई बात नहीं है, परमाणु! शीना इज परफेक्टली ऑल राइट! कुछ ही देर में वह होश में भी आ जाएगी!
और, हां, उस गुंडे के कटे हाथ को जोड़ने का ऑपरेशन भी कामयाबी से चल रहा है! उसका हाथ फिर से उसके शरीर का हिस्सा बन जाएगा!
लेकिन डॉक्टर! वह हाथ अपने-आप हिला कैसे?
और उसने लेजर बीम कैसे चला दी?
अंगों के कटने के काफी देर बाद तक उनमें हरकत बनी रहती है परमाणु! छिपकली की कटी पूंछ देखी है कभी? उसमें...
ई ssss या ssss
ये आवाज तो शीना के कमरे से आ रही है!
कुछ गड़बड़ है! जल्दी चलिए डॉक्टर!

वह कमरा अब कमरा नहीं रहा था-
ओ... ओ माई गॉड! ये... ये क्या हो रहा है? पूरा कमरा एक छोटा सा नर्क बन गया है! ऐसा लग रहा है, जैसे कि मैं कोई भुतहा फिल्म देख रहा हूं!
शीना! क्या हो गया है तुमको? तुम्हारे चेहरे को क्या हो गया है? ऐसी हरकतें तुम क्यों कर रही हो?
शीना ओ शीना! शीना ♫ शीना! तूने परमाणु का दिल छीना ♫ छीना... छीना ♫
तेरी प्रेमिका का बदन अब हमारे कब्जे में है परमाणु! अतृप्त आत्माओं की टोली के कब्जे में!

ये... ये क्या बकवास है, शीना?
हम शीना नहीं हैं! हम वो हैं जिसने शीना को तुम्हारे छीना है, परमाणु!
और दुबारा हमारी बात को बकवास मत कहना!
अगर तूने हमारी बात नहीं मानी, तो हम शीना को उसके बदन समेत बाहर सड़कों पर ले जाएंगे और इससे इतने धमाके करवाएंगे कि पुलिस वाले गोलियों के धमाके से इसके चिथड़े उड़ा देंगे!
और तू हमको ऐसा करने से रोक भी नहीं पाएगा!
नहीं! रुको!
क्या... क्या चाहते हो तुम लोग?
धरती की सतह से नीचे लावे की लहरों में ड्रैकुला का शरीर बह रहा है! उसे निकाल ला!

मैं लावे के अंदर नहीं जा सकता! मेरी पोशाक इतनी मजबूत नहीं है। और अगर किसी चमत्कार से मैं वहां पर चला भी गया तो मुझे लावे के सागर में ड्रेकुला का शरीर कहां मिलेगा। वह तो गलकर लावे का ही एक हिस्सा बन चुका होगा!
नहीं! ड्रेकुला का शरीर एक पल के लिए गलता है और फिर बन जाता है! फिर गलता है, फिर बन जाता है! क्योंकि उसने अमृत पी लिया है!
तुम क्या बकवास कर रहे हो? मुझे तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है। तुमने गलत आदमी से मदद मांगी है! मैं ऐसा नहीं कर सकता!
तुझे समझाने का वक्त हमारे पास नहीं है, क्या करना है और कैसे करना है, ये तू खुद समझ जा, वर्ना तैयार हो जा...
...इस लड़की की तबाही का नजारा देखने के लिए!
इस बार शीना के शरीर में ही जगह-जगह पर धमाके होने लगे-
बडूम
आऽऽहे
धड़ाक
कड़म
और शीना की दिल दहला देने वाली चीखों ने-

उस मददगार को वहां पर बुला भेजा जिसके कानों से किसी भी मजबूर स्त्री की पुकारें बचकर निकल नहीं पाती थीं-
शक्ति!
यहां पर क्या हो रहा है परमाणु?
शीना के गले से किन्हीं और की ही आवाजें निकल रही हैं, जो प्रेतात्माएं होने का दावा कर रही हैं!
वे आवाजें सही कह रही हैं, परमाणु! शीना के शरीर में बुरी आत्माओं ने वास कर लिया है! लेकिन शक्ति के रहते ये प्रेतात्माएं यहां टिक नहीं पाएंगी!
मैं इनको शीना के शरीर से बाहर निकालती हूं!

मेरी ये अद्भुत आग सिर्फ शीना के शरीर में मौजूद आत्माओं को जलाएगी, शीना के शरीर को नहीं!
और इस आग की जलन दुष्ट आत्माओं को शीना का शरीर छोड़ने पर मजबूर कर देगी!
भागो दुष्ट आत्माओं, वर्ना शक्ति तुमको हमेशा के लिए इस आग में जलने के लिए छोड़ देगी!
शक्ति के इस अनोखे वार से दुष्टात्माएं तड़प तो उठीं-
लेकिन शीना के शरीर से बाहर आने के लिए तैयार नहीं हुईं-
तुम कुछ भी कर लो शक्ति, लेकिन हम शीना के शरीर को छोड़कर बाहर नहीं आ सकते!
हम इसका शरीर एक ही सूरत में छोड़ सकते हैं! जब ये मर जाएगी, तब!
क्योंकि अगर हमने इसका शरीर छोड़ दिया तो ड्रैकुला हमको बुरी तरह तड़पाएगा! इससे तो अच्छा है कि हम तुम्हारी आग में ही झुलसते रहें!
इस आग से जो आत्माएं नहीं डरीं, वे कभी इसका शरीर छोड़कर नहीं जाएंगी! पर ये चाहती क्या हैं परमाणु?
परमाणु, शक्ति को आत्माओं की मांग सुनाता चला गया-

समझी! ये ड्रैकुला की साजिश है! लेकिन यह समझ में नहीं आया कि अमृत उसको कहां से मिल गया? खैर! मामला तो गंभीर हो गया है परमाणु! अगर शीना की जान बचानी है तो इन आत्माओं का काम पूरा करना ही पड़ेगा!
ड्रैकुला का शरीर हमको ढूंढ़ना पड़ेगा!
लेकिन शक्ति, लावे की नदी में हम ड्रैकुला को ढूंढ़ेंगे कैसे?
और अगर उसका शरीर हमको मिल भी गया तो उसे ड्रैकुला की आत्मा को वापस सौंपकर दुनिया को खतरे में भला हम क्यों डालेंगे?
ऐसा हम नहीं कर सकते, शक्ति! एक शीना की जान के लिए हम लाखों जानों को खतरे में नहीं डाल सकते!
यह समस्या सिर्फ एक शीना की नहीं है, परमाणु! जानते हो मैंने शीना के बदन में आत्माओं का वास होने की बात को तुरन्त क्यों मान लिया था? बाहर देखोगे तो तुरन्त समझ जाओगे!
और जब तक ड्रैकुला के शरीर को ढूंढ़ने की शर्त नहीं मानी जाएगी, तब तक ऐसे इंसानों की संख्या बढ़ती रहेगी!
लेकिन लावे के सागर में हम उतरेंगे कैसे?
ये... ये क्या?
हां, परमाणु! कई लोगों के अंदर दुष्टात्माओं ने पहले ही प्रवेश कर लिया है!
उसका इलाज मैंने ढूंढ़ निकाला है परमाणु!
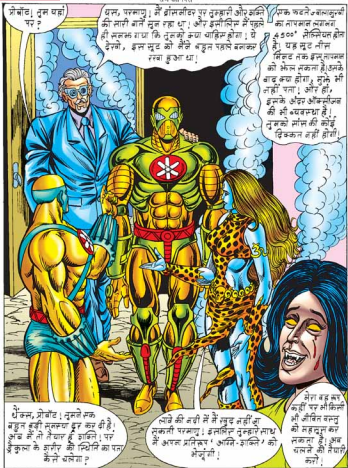
प्रोबॉट! तुम यहां पर?
यस, परमाणु! मैं ट्रांसमीटर पर तुम्हारी और शक्ति की सारी बातें सुन रहा था! और इसीलिए मैं पहले ही समझ गया कि तुमको क्या चाहिए होगा! ये देखो, इस सूट को मैंने बहुत पहले बनाकर रखा हुआ था!
एक फटते ज्वालामुखी का तापमान लगभग 4500° सेल्सियस होता है! यह सूट तीस मिनट तक इस तापमान को झेल सकता है। उसके बाद क्या होगा, मुझे भी नहीं पता! और हां, इसके अंदर ऑक्सीजन की भी व्यवस्था है! तुमको सांस की कोई दिक्कत नहीं होगी!
थैंक्स, प्रोबॉट! तुमने एक बहुत बड़ी समस्या दूर कर दी है! अब मैं तो तैयार हूं शक्ति! पर ड्रैकुला के शरीर की स्थिति का पता कैसे चलेगा?
लावे की नदी में मैं खुद नहीं जा सकती परमाणु! इसलिए तुम्हारे साथ मैं अपना प्रतिरूप 'अग्नि-शक्ति' को भेजूंगी!
मेरा वह रूप कहीं पर भी किसी भी जीवित वस्तु को महसूस कर सकता है! अब चलने की तैयारी करो!

ध्रुव और नागराज को अगर परमाणु एवं शक्ति के इस कदम का पता चलता तो वे उन दोनों को रोकने या समझाने के लिए दिल्ली जरूर पहुंचते-
लेकिन उनको तो पूरे महानगर के सिर पर लटकती उस तलवार ने रोका हुआ था-
जासूस सर्पों ने सही खबर दी थी! वह छः मुंहा सर्प वापस आ गया है!
कोई प्राणी आग में जलकर भी वापस कैसे आ सकता है?
क्योंकि ये प्राणी, जीवित नहीं, मृत है ध्रुव!
इसको जरूर ड्रैकुला की आत्मा ने भेजा है!
इस पर तुम्हारे वार नहीं मेरे वार असर करेंगे!

ओह! मैं अपनी पूरी साधना शक्ति का प्रयोग कर रही हूं! लेकिन इस पर कोई खास असर होता नजर नहीं आ रहा है!

इस नाग के अंदर जरूर कोई अत्यंत शक्तिशाली आत्मा है!

मुझे मानसिक शक्ति द्वारा नागराज और ध्रुव की शक्तियों को अपने साथ जोड़ना होगा... आऽऽऽह... ये... ये क्या?

लेकिन ध्रुव और नागराज के रहते यह संभव नहीं था-

नागराज! मैं लोरी को इस सांप के गले से नीचे जाने से रोकता हूं! तुम इस सांप को रोको!

अपनी योजना पूरी कर पाने से पहले ही लोरी उस सर्प के मुंह में समा चुकी थी-

ये कोई बड़ा काम नहीं है! ये सांप तो मेरी फुंकार से विचलित होकर मुंह खोल देगा!

बस, ये उम्मीद करो कि इसका जहर लोरी के शरीर के अंदर न पहुंचा हो!

उस खतरनाक सर्प ने तड़पकर लोरी को उगल दिया-
लोरी के बदन या कपड़ों पर कोई निशान नहीं है नागराज! यानी जहर इसके बदन के अंदर नहीं पहुंचा है! लेकिन ये शायद शॉक से बेहोश हो गई है!
अब इससे मदद की कोई उम्मीद नहीं है! जो कुछ करना है वह हमको ही करना होगा!
फ़ूऊऊऊ
फ़ूऊऊ
हम इसको कुछ देर तक रोकने के अलावा और कुछ नहीं कर सकते ध्रुव!
इसको खत्म करने का तरीका हमको नहीं पता है!
अब शायद इसको रोकने का तरीका भी हमारे पास नहीं है! क्योंकि अब इसका एक सर्प मुझे निगलने के लिए बढ़ रहा है!
और मैं सिर्फ स्टार ब्लेड्स से इसका मुकाबला नहीं कर सकता...
... लेकिन नहीं! ये... मुझे निगलने के लिए नहीं आ रहा है!
इसके मुंह से कुछ निकल रहा है!

हे भगवान! ये तो प्राचीन सर्प सैनिक हैं! ज़ुंबी सैनिक! और जिस तरह से इन्होंने नीली पैंट और पीली शर्ट पहने उस आदमी पर वार किया है, उससे ये साफ है कि इनको मेरे पीछे ही भेजा गया है!
और मुझे लग रहा है कि इनको रोकने की कोशिश कारगर सिद्ध नहीं होगी!
या... या शायद होगी! इन प्राचीन सैनिकों के शरीर इतने भुरभुरे हैं कि इनको एक हल्के से वार से ही तोड़ा जा सकता है!

लेकिन... लेकिन ये अपने आप जुड़ भी जाते हैं!
अगले ही पल- ध्रुव को ज़ोंबी सैनिकों की फुर्ती का एहसास हो गया-
कमाल की है इनकी फुर्ती! मुझे लगा कि मैं आराम से बच सकता हूं! लेकिन फिर भी मुझे खरोंच लग ही गई!
खटाक
चलो, कम से कम मेरा हाल बिजली के उस खंभे जैसा तो नहीं हुआ!
ये अंग लगी तलवार काफी तेज लगती है! और ये इनका अपना हथियार भी है! ये इनको काटने में मेरी मदद कर सकता है!
ध्रुव ने ये ट्रिक पहले भी कई बार आजमाई थी-
और उसे कामयाबी भी मिली थी-
लेकिन इस बार ये चाल कामयाब नहीं हुई-
अरे! ये... ये तलवार तो बुरी तरह से थरथरा रही है! इससे वार करना तो दूर मैं इसको थामे भी नहीं रख सकता!
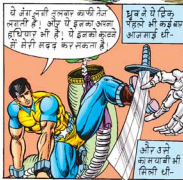
और अब ये तलवार मेरे हाथों से छूटकर वापस जूंबी सैनिक के हाथ में जा रही है!
अब तो भागने के अलावा और कोई चारा नहीं है!
भागते- भागते ही कोई तरीका सोचना होगा!
ध्रुव को अब तक सफलता नहीं मिल पाई थी-
और यही हाल नागराज का था-
लेकिन अब उसने उस विचित्र नाग को बराबर की टक्कर देने की ठान ली थी-
फ़ुऊऊ

इस पर असर हो रहा है नागराज! वार करते रहो! लगातार!
लेकिन इन वारों को एकाएक थमना पड़ा-
नहीं! इस हड़ीले सर्प के मुंह से निकले सर्पों के स्पर्श ने...
... शीतनाग और सौडांगी को कंकालों में बदल दिया है!
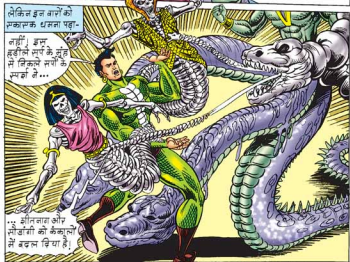
तूने मेरे प्रिय मित्रों को मुझसे जुदा किया है। अब तू नहीं बचेगा, विनाशकारी सर्प!
नागराज का गुस्सा भड़क उठा था-
और जब नागराज का गुस्सा भड़कता है तो लगता है कि जैसे शिवजी का तीसरा नेत्र खुल गया हो-
उसके हाथों में ढेर सारे नागफनी सर्प लहरा उठे-
और विचित्र सर्प के घूमते फनों के बीच में से उछल-उछलकर नागराज के हाथों में थमी चमकती नागफनी सर्पों की अद्भुत लचीली तलवार।
उस विचित्र सर्प को सब्जी की तरह काटती चली गई-
मैं तुझे-टुकड़ों-टुकड़ों में बिखेर दूंगा!
लेकिन तेरे उन टुकड़ों को भी मैं नहीं बख्शूंगा!
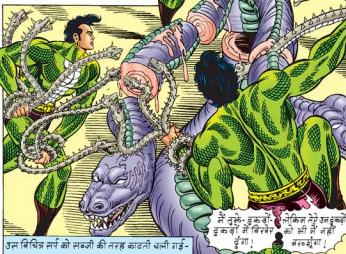
ध्वंसक सर्पों के धमाकोंकी मदद से उनको धुंएं में बदल दूंगा मैं !...
...और उस धुएं को मेरे असंख्य सर्प पीजाएंगे! ऐसे तेरा नामोनिशान मिट जाएगा!
शायद तेरा नामोनिशान मिटने से मेरे साथी फिर से अपने सामान्य रूप में वापस आजाएं!
हमारा नामोनिशान नहीं मिटना नागराज! हम अतृप्त आत्माएं अपने शरीर की राख के एक भी कण से अपने पूरे शरीर को फिर से बना सकते हैं!
लेकिन तू ऐसा नहीं कर सकता! इसलिए नामोनिशान मिटेगा तो सिर्फ तेरा!

ऐसा नहीं होगा! इस बार तू प्रेत रूप में आया है, नासुकि! लेकिन इस बार भी तुझको वापस जाना होगा, खाली हाथ!
महात्मा कालदूत! आप... आप यहां पर कैसे? और आपकी बातों से ऐसा लग रहा है जैसे कि आप इस नाग से पहले भी टकरा चुके हैं!
सत्य है, नागराज! इसीलिए मुझे इसके आने का आभास हो गया और मुझे इसको रोकने के लिए यहां आना पड़ा! ये सर्पराज वासुकि का पौत्र नासुकि है! असुरों की संगत ने इसकी आदतें बिगाड़ दी थीं, और सदियों पहले इसने नागद्वीप पर कब्जा करके स्वयं नाग सम्राट बनने की कोशिश की थी! उस वक्त स्वयं वासुकि ने हमारी मदद करके इसको मौत के घाट उतार दिया था!

लेकिन इस बार शायद वासुकि हमारी मदद के लिए न आ पाएं! और बगैर उनकी मदद के जब हम इसको जीवित अवस्था में नहीं हरा पाए थे तो इस मृत अवस्था में तो इसको हराना असंभव के बराबर है!
ध्रुव को भी यही लग रहा था-
ओफ्! इनकी स्पीड तो मुझसे भी तेज है! इनसे भागकर भी बचा नहीं जा सकता!
क्योंकि ये चारों तरफ से मुझको घेर चुके हैं!
अब इसको हराने के लिए क्या करूं? इनको जलाऊं, डुबोऊं या काटूं? खैर, अब तो इतने एक्सपेरीमेंट करने का वक्त भी नहीं है!
और इनकी फुर्ती का नमूना मैं... आऽऽऽ ह... देख चुका हूं!

अरे! ये तो 'स्प्रे कैन' हैं! इनके अंदर का तरल पदार्थ, हाई प्रेशर से भरा जाता है जो एक धमाके के साथ फट सकता है! ऐसी चीज इन प्राचीन सर्प सैनिकों ने कभी देखी नहीं होगी!
कैन, तलवार से टकराकर फटी तो जरूर-
लेकिन-
ओह! इसका हेलमेट नारंगी जरूर हो गया, लेकिन इस पर धमाके का कोई असर नहीं हुआ! अब मैं... अरे! ये 'स्प्रे कैन' तो पेंट की हैं! इन सैनिकों से एक साथ निपटने में ये मेरी मदद कर सकती हैं!
बस मुझे खास रंगों की कैन्स को तलाशना पड़ेगा!
ये रहीं उन खास दो रंगों की कैन्स जो मुझको चाहिए थीं!
अब ये कैन्स मिनटों में अपना काम कर देंगी! मुझे बस, उन कुछ मिनटों तक इनके वारों से बचना होगा!

गुड! मेरा आइडिया काम आ गया! मैंने नीली और पीली स्प्रे पेंट कैन्स की मदद से इनको अपनी पोशाक के अनुसार नीला और पीला रंग दिया है! ... इन्होंने जब पहले ऐसे ही कपड़े पहने एक आदमी पर हमला किया था, मैं तब ही समझ गया था कि ये मुझे सिर्फ मेरे कपड़ों के रंग की मदद से ही पहचान रहे हैं! ...
... और मेरा ख्याल सही निकला!
अब ये एक-दूसरे को ही ध्रुव समझकर काट रहे हैं! और अपने ही हथियारों से कटने के कारण ये दुबारा जुड़ भी नहीं पा रहे हैं!
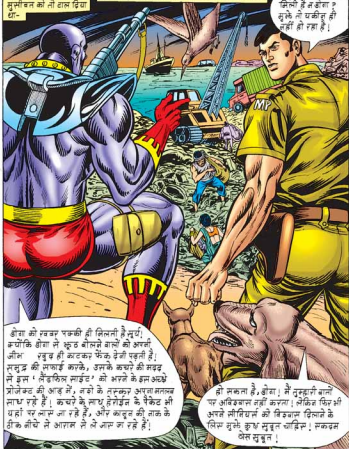
ध्रुव ने अपने ऊपर आई मुसीबत को तो टाल दिया था-
लेकिन मुसीबतें तो अपने पैर पसारती ही जा रही थीं-
तुमको पक्की खबर मिली है न डोगा? मुझे तो यकीन ही नहीं हो रहा है!
MP
डोगा को खबर पक्की ही मिलती है सूर्य! क्योंकि डोगा से झूठ बोलने वालों को अपनी जीभ खुद ही काटकर फेंक देनी पड़ती है! समुद्र की सफाई करके, उसके कचरे की मदद से इस 'लैंडफिल साईट' को भरने के इस अच्छे प्रोजेक्ट की आड़ में, नशे के तस्कर अपना मतलब साध रहे हैं! कचरे के साथ हेरोईन के पैकेट भी यहां पर लाए जा रहे हैं, और कानून की नाक के ठीक नीचे से आराम से ले जाए जा रहे हैं!
हो सकता है, डोगा! मैं तुम्हारी बातों पर अविश्वास नहीं करता! लेकिन फिर भी अपने सीनियर्स को विश्वास दिलाने के लिए मुझे कुछ सबूत चाहिए! एकदम ठोस सबूत!

Amaan
धैर्य रखो, सूर्य! सबूत आ रहे हैं, मेरे दोस्तों की नाक कानून की नाक की तरह नहीं है। ये इस कचरे के ढेर में से हेरोईन के पैकेटों को ढूंढ निकालेंगे! और वही होगा तुम्हारा पक्का सबूत!
अगर ऐसा है तो स्मगलर हैं कहां पर? यहां पर तो कचरा बीनने वालों के अलावा और कोई नजर नहीं आ रहा है!
कैसे नजर आएगा, क्योंकि ये कचरा बीनने वाले ही तो तस्करों के आदमी हैं!
आओ मेरे साथ!
और तलाशी लो इसके कचरे भरे थैले की! इसमें प्लास्टिक की थैलियां और टीन के डिब्बे नहीं होंगे...
...हेरोईन के पैकेट होंगे!
नहीं, डोगा! इन थैलों में तो कुछ भी नहीं है! तुम्हारा शक कहीं गलत तो नहीं है!
नहीं सूर्य!

... डोगा को कोई गलत फहमी नहीं हुई है! इसको एकदम सही खबर दी गई थी! लेकिन जान-बूझकर! हमने ही अपने आदमी को इस तक ये खबर पहुंचाने को कहा था! ताकि यह अपने पुलिसिए दोस्त यानी तुम्हें लेकर यहां आए और यहां पर हमारे बिछाए जाल में तुम दोनों फंस जाओ!
तड़तड़ तड़तड़तड़तड़ तड़
तुम दोनों ने हमारा बहुत नुकसान किया है! आज हम तुम्हारा परमानेंट नुकसान करके उसकी भरपाई कर लेंगे!
तुम लोग बिलकुल सही जगह पर आए हो! ये कूड़े का ढेर ही तुम्हारी असली जगह है! वैसे भी तुम सबकी लाशों को मैं यहीं पर फेंककर जाता!
चारों तरफ से ऑटोमैटिक हथियार डोगा और सूर्य पर तने हुए थे-
और गोलियों की उस बाढ़ से...

...बच पाना असंभव था-
लेकिन डोगा के लिए यह रोजमर्रा की बात थी-
गोलियों की बौछार को उस टीन की चादर ने रोका-
और जब टीन की वह चादर छलनी होकर डोगा और मशीनगन के बीच से गिरी तो-
डोगा गायब हो गया! कहां गया होगा? जरूर कूड़े के ढेर में छुपा होगा! मौके की इंतजार में!
लेकिन वह ये नहीं जानता कि वह मौके का इंतजार करता रह जाएगा...
लेकिन डोगा उस ढेर के नीचे नहीं...
...ढेर के ऊपर था-
कड़ाक
...और उसका इंतजार कर रही मौत उसको धर दबोचेगी!
कूड़े का ढेर ग्रेनेडों के वारों से कांप उठा-
बड़ाम
अगर डोगा वहीं पर था तो उसका बच पाना असंभव था-
कड़ाक की आवाज के साथ हमलावर की रीढ़ की हड्डी जवाब दे गई-
एक कचरे का डिब्बा तो गया! अब तीन और बचे हैं!

सूर्य के निशाने भी अचूक थे-
उसकी एक गोली भी गोलियों की बाढ़ पर भारी पड़ रही थी-
धांय
लेकिन गुंडों का पलड़ा फिर भी भारी था-
सूर्य! घबरा मत! मैं आ रहा हूं! आ रहा हूं मैं!
और वह इसलिए क्योंकि ये जाल उन्होंने खुद रचा था-
हर जगह पर मौत का सामान रखा हुआ था। कहीं पर ग्रेनेड तो कहीं पर-
लैंड माइन्स!
हा हा हा! इस पुलिसिए को तो आधे घंटे के अंदर-अंदर डॉक्टरी मदद न मिली तो ये मर जाएगा!
और डोगा इसको अस्पताल पहुंचाना चाहेगा ही चाहेगा! अब उसका ध्यान हमको मारने के बजाए इंस्पेक्टर को बचाने में रहेगा!

कहानी 67 पेज से जारी

डोगा सचमुच दुविधा में फंस गया था-
और दुविधा में फंसने वालों को एक ही चीज मिलती है-
शिकस्त-
आऽऽऽह!
एक गोली डोगा का बाजू रगड़ती हुई निकल गई-
हा हा हा! अब तेरी भी मौत आ गई है डोगा! क्या अपने साथी की तरह तड़प-तड़पकर मरना चाहता है या फिर एक ही झटके में खल्लास करूं तुझको?
क्योंकि दूसरा मौका डोगा किसी को नहीं देता! भौं भौं!
घप्प
गर्रर्र!
आऽऽऽह! इन कुत्तों के भरोसे कब तक बचेगा तू मेरी गोलियों से?
डोगा को मारना है तो एक झटके में ही मारना पड़ेगा!
ऐसे तेरे कुत्ते भी मरेंगे...
...और तू भी!
अरे! अरे! ये क्या?
कू... कूड़े का ढेर अपने-आप उठकर मेरा... मेरा हाथ कैसे पकड़ रहा है?

इंस्पेक्टर सूर्य डोगा का भाई है। जानने के लिए पढ़े **डोगा माई ब्रदर** और **क्यों फेंका कूड़े पर**

भाई की धीमी पड़ती सांसों ने डोगा की आवाज में लाचारी भर दी थी-
कौन हो तुम? और अगर तुम मेरे भाई को बचा सकते हो तो बचाते क्यों नहीं? क्यों नहीं बचाते इसकी जान?
हम इसकी जान बचाएंगे। लेकिन सौदा होने के बाद।
सौदा! सौदा कैसा? कौन हो तुम जो डोगा के साथ सौदा करना चाहते हो?
बोर्डेलो कहते हैं मुझे। और मैं एक आत्मा हूं! पर अकेला नहीं हूं। मेरे साथ आत्माओं की पूरी एक फौज है। और हमारे पास वह शक्ति है जो तेरे भाई को ठीक भी कर सके और उसकी आत्मा को बाहर निकलने से रोक भी सके!
और तुमसे ऐसा करवाने के लिए मुझे क्या करना होगा?
सदियों पहले यहां से बहुत दूर, एक नदी के किनारे एक महायुद्ध हुआ था। मेरे और मेरे सैनिकों को उस युद्ध में काट डाला गया था! हालांकि मरते-मरते हमने भी दुश्मनों को खत्म कर दिया था!
पर हमारे वहीं पर पड़े रह गए अंगों को कुछ समय बाद नदी में आई बाढ़ बहा ले गई! और नदी के बहाव के साथ-साथ हमारे कटे अंग समुद्र में जा पहुंचे! सदियों तक समुद्र की अलग-अलग धाराओं में तैरते हमारे अंग तुम्हारे शहर के तट पर आकर जमा हो गए!
और इस तट के समुद्र की सफाई अभियान में वे सारे अंग भी इस कूड़े के साथ-साथ समुद्र के ऊपर इस विशाल कूड़ेदान में आ गए!

अब जल्दी सोच! सौदा तुझे मंजूर है या नहीं! हमारे शरीर हमको दे दे और अपने भाई के शरीर को जिन्दा कर ले!

मंजूर है मुझे तुम्हारा सौदा! भाई को जिन्दा करने के लिए डोगा सबकुछ करेगा! अपनी आत्मा गिरवी रखकर भी भाई की आत्मा बचानी पड़ी तो बचाएगा डोगा!

दोस्तों, जाओ! ढूंढो इस ढेर में से अंगों को और बनाओ उनके जोड़े!

और मुंबई से सैकड़ों किलोमीटर दूर-
हवाई द्वीप में स्थित एक ज्वालामुखी के पास-
इस ज्वालामुखी के रास्ते से हम पृथ्वी के गर्भ में स्थित लावे तक पहुंच जाएंगे, परमाणु!
और पृथ्वी के गर्भ में लावे के सागर तक पहुंचने के बाद मैं उस लावे की धारा का पता करूंगी, जिसमें ड्रैकुला का शरीर तैर रहा है!
ओह! मुझे किसी जीवित वस्तु का आभास मिल रहा है! और इस खौलते लावे में जीवित वस्तु एक ही हो सकती है! ड्रैकुला का शरीर!

इसको पकड़ना आसान नहीं है परमाणु! क्योंकि ये बार-बार नष्ट होकर गायब हो रहा है! इसको मुझे शक्ति पुंज के अंदर बंद करना होगा!

ओह! लावे से संपर्क टूटते ही ड्रैकुला का शरीर फिर से बनता जा रहा है! लेकिन अब हम क्या करेंगे? ड्रैकुला की आत्मा को उसका शरीर सौंपकर तो हम एक नई मुसीबत पैदा कर देंगे!

उसका तरीका मैंने खोज लिया है! ड्रैकुला को उसका शरीर सौंपने से पहले मैं इस शरीर में हलाहल विष की एक बूंद डाल दूंगी! जब तक हलाहल इस शरीर के अंदर रहेगा तब तक यह शरीर आत्मा के घुसने के बाद भी जीवित नहीं हो पाएगा!

ओssssह!

क्या हुआ परमाणु?

पता नहीं शक्ति! मुझे लगता है कि मेरे यंत्रों में कुछ खराबी पैदा हो रही है!

म... मैं भी ड्रैकुला का शरीर लेकर बाहर नहीं निकल पा रही हूं! कोई अवरोध मुझे रोक रहा है!

हे ईश्वर! अब मैं समझी! ये तो एक बड़ी मुसीबत है परमाणु!

ड्रैकुला के साथ-साथ हम भी इस वक्त प्लाजला के पेट में हैं! और यहां से बाहर निकल पाना लगभग असंभव है!
ये प्लाजला क्या बला होती है, शक्ति?
किसी भी पदार्थ को गर्म करने पर वह ठोस रूप से पहले तरल रूप में बदलता है और फिर गैस के रूप में! लेकिन अगर तापमान को बढ़ाते रहा जाए तो पदार्थ एक चौथी अवस्था में पहुंच जाता है! इसको प्लाज्मा कहते हैं! खैर, यह तो तुम खुद भी जानते होगे! यह प्राणी उसी प्लाज्मा से बना हुआ है! चुम्बकीय तरंगों में तैरते पदार्थ के कणों से बना हुआ एक प्राणी!
और ड्रैकुला के साथ-साथ हमारे जैसे शरीर भी इसको युगों बाद पचाने को मिले हैं! यह हमको आसानी से जाने नहीं देगा!
ओह! इसकी चुम्बकीय तरंगें मेरी पोशाक के यंत्रों को खराब कर रही हैं! मैं तो इसके पचाने से पहले ही राख बन जाऊंगा शक्ति! कुछ करो! जल्दी!

इसी वक्त महानगर में-
ओ, ध्रुव! तुम कहां रह गए थे? मैं तुमको ढूंढ रही थी।
तुम होश में आ गई लोरी! लेकिन तुम नागराज और कालदूत की मदद क्यों नहीं कर रही हो?
क्योंकि मैं मुंबई में एक और बड़े खतरे का आभास पा रही हूं! ड्रैकुला जितना खतरनाक ही एक और प्रेत कई अन्य प्रेतों के साथ मुंबई में कोई खतरनाक खेल, खेल रहा है! मुझे यहां मदद करने के बजाय वहां पर जाना होगा!
ओह! कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि ये क्या हो रहा है? पहले मैं इस नाग को खत्म करने में नागराज की मदद करूंगा, फिर इस बारे में कुछ सोचूंगा!
तुम यहां पर भी रहोगे और मेरे साथ भी चलोगे! कैसे, यह मुझ पर छोड़ दो!
सोचने का समय नहीं है! वो खतरा शायद ड्रैकुला से भी बड़ा है! तुमको मेरे साथ चलना ही पड़ेगा!
फिलहाल मैं ऐसा नहीं कर सकता, लोरी! मुझे यहां रहना है!
लोरी डोगा से भिड़ने के लिए जा रही थी-

और वहीं पर नासुकि को नष्ट करनेके तरीके तलाशे जा रहे थे।
नागराज! इसका शरीर मृत है और इसकी आत्मा अपने शरीर में, शरीर से नाता टूटने के बाद भी घुसी हुई है! इसलिए इसकी आत्मा को इसके शरीर से निकालना कोई मुश्किल काम नहीं है!
मुश्किल काम है उस आत्मा को कैद करके इस नाग शरीर में वापस जाने से रोकना! और आत्मा को निकालने और उसको कैद करने जैसे दो काम में एक साथ नहीं कर सकता!
तूने तरीका तो सही सोचा है, कालदूत! पर तू ऐसा कर ही नहीं पाएगा! क्योंकि तेरे कालसर्पी को मेरा हाड़सर्प चबा गया है! अब तेरे पास मेरे कंकाल वार से बचने का कोई रास्ता नहीं है!
तेरे हाड़सर्प को मेरी ज्वाला शक्ति जलाकर राख में बदल देगी नासुकि! और राख के स्पर्श से मुझे कोई नुकसान नहीं पहुंचेगा!

तू मेरे हाड़ सर्प को राख में बदल सकता है! जरूर बदल सकता है कालदूत! लेकिन भूल मत कि इस शरीर के अंदर अब एक अतृप्त आत्मा की शक्ति है। और अतृप्त आत्माएं अपनी राख से भी फिर अपना शरीर पा सकती हैं!
राख हो चुका हाड़ सर्प फिर से अपना रूप धारण कर रहा था-
लेकिन हाड़ सर्प कालदूत तक पहुंच नहीं पाया-
और अब उसका फन कालदूत से थोड़ी ही दूरी पर था-
ये... ये कैसे हुआ? इस सृष्टि में तो ऐसा कोई भी प्राणी नहीं है जो हाड़-सर्प का स्पर्श करने के बाद भी कंकाल में न बदले! फिर किसने पकड़ा है हाड़ सर्प को?
मैंने! यानी मानस नागराज ने! मानस रूप को हाड़ सर्प कंकाल में नहीं बदल सकता! और मानस रूप के शिकंजे से तेरी आत्मा भी नहीं बच पाएगी!
कड़क
वाह, नागराज! तुम्हारा ये रूप तो मैंने पहली बार देखा है! अब मेरा काम आसान हो गया है। मैं इसकी आत्मा को बाहर निकालता हूं और तुम उस आत्मा को जकड़ लेना!
लेकिन... लेकिन इसकी आत्मा बहुत शक्तिशाली है! सिर्फ मेरे वार इसकी आत्मा का संबंध इसके शरीर से नहीं तोड़ पा रहे हैं! मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत है नागराज! तुम भी इस पर वार करो!
मेरा सारा ध्यान हाड़ सर्प पर है! महात्मन्!

लेकिन तभी-
अरे! ये रहस्यमय प्राणी कौन है? ये नासुकि पर वार कर रहा है, और नासुकि के वार भी इस पर असर नहीं डाल पा रहे हैं! लेकिन ये जो भी हो, इसके वारों ने नासुकि को इतना विचलित कर दिया है कि अब मेरा चीरचला इसकी आत्मा और शरीर को अलग-अलग कर सकता है!
और मैं इस आत्मा को शिकंजे में दबोच सकता हूं! लेकिन हमारी मदद करने वाला ये रहस्यमय प्राणी है कौन?
ये प्राणी एक इंसान है नागराज! और इसका नाम...
...ध्रुव है! जब नासुकि तुम्हारे और महात्मा कालदूत के वारों से तड़प रहा था तो मैंने चुपके से स्टार ब्लेड की मदद से इसकी केंचुली उतार ली थी। ये मुझको रहस्यमय प्राणी बनाने के साथ-साथ मुझे नासुकि के वारों से भी बचा रही थी!
खैर, नासुकि का खतरा तो दूर हो गया है!

लेकिन एक गड़बड़ हो चुकी थी-
वासुकि की आत्मा के उसके शरीर से निकलने से पहले उसका जो हाड़-सर्प शरीर से अलग हो गया था उसमें अभी भी थोड़ी बहुत जान बची हुई थी-
जैसे कटने के बाद भी छिपकली की पूंछ तड़पती रहती है वैसे ही कटा हाड़ सर्प भी अपने स्थान से उछला-
और उसका स्पर्श कालदूत के शरीर से हो गया-
इस स्पर्श का नतीजा तुरंत सामने आ गया-
कालदूत का शरीर कंकाल में बदल गया-
और वासुकि की आत्मा को अपने शरीर में वापस आने का मौका मिल गया-
ये... ये क्या अनर्थ हो गया! अब तो वासुकि का उत्पात रोकने का कोई तरीका नहीं बचा है!
जो कुछ मैंने सुना है, उसके अनुसार एक तरीका बचा है, नागराज!
महात्मा कालदूत को लेकर नागद्वीप की तरफ भागो!
वहीं पर इस शैतान का अंत हो सकता है!

और इसी वक्त- मुंबई की 'लैंड फिल' साईट पर-
ये लो बोर्डेलो! मेरे दोस्तों ने हर शरीर के अंगों का सेट बना दिया है! बस किसी की एक टांग गायब है तो किसी का एक हाथ! एक-दो के तो सिर भी गायब हैं!
हम आत्माओं को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता! अब बस हमको इन शरीरों को जोड़कर अपनी- अपनी अतृप्त आत्माओं का संपर्क इनसे करना है!
और वह काम मैं आराम से कर सकता हूं!
देखो!
जादू की तरह कटे- फटे शरीरों के अंग एक- दूसरे से जुड़ते चले गए-
अब बोर्डेलो और उसके सैनिकों की अतृप्त आत्माओं को अपना संपर्क अपने शरीरों से जोड़ना बाकी था-
लेकिन ऐसा हो न सका-
कड़
कड़ाक
मेरी शक्ति से जुड़े इन सारे शरीरों को किसने तोड़ डाला! किसमें है इतनी शक्ति?
मुझमें है शैतान!

और मैं तेरी चाल को कभी कामयाब नहीं होने दूंगी!
ओफ़! इस लड़की में तो जबरदस्त शक्ति है! मेरी शक्ति इसके आगे चूर-चूर हुई जा रही है! इसको रोकना होगा!
वर्ना अगर मेरा काम अधूरा रह गया तो तेरा काम भी अधूरा रह जाएगा! फिर कभी जिन्दा नहीं होगा इंस्पेक्टर सूर्य!
नहीं! ऐसा नहीं हो सकता! सूर्य की जान बचाने के लिए मैं कुछ भी कर सकता हूं!
अपनी जान दे भी सकता हूं, और किसी और की जान...

कहानी 83 पेज से जारी

... ले भी सकता हूं!

तड़ तड़ तड़ तड़ तड़ तड़ तड़

ये... ये क्या कर रहे हो डोगा? मुझे पहचानो! मैं ध्रुव की दोस्त हूं! लोरी!

मैं तुमको पहचान गया हूं लोरी! लेकिन इस वक्त मैं इस शैतान का साथ देने के लिए विवश हूं! क्योंकि अभी सिर्फ यही मेरा काम कर सकता है! सूर्य की जान को इसके शरीर से निकलने से रोक सकता है!

इसीलिए इसको जिन्दा करने का काम तो मैं खुद भी कर सकती हूं! देखो!

ये लड़की डोगा को भी मेरे खिलाफ कर देगी! मुझे कुछ ऐसा करना होगा कि डोगा खुद इस लड़की के खिलाफ हो जाए!

लोरी के शक्ति वार ने सूर्य की आत्मा को उसके शरीर के अंदर ढकेल तो दिया था-

लेकिन उसके साथ-साथ बोर्डेलो का एक प्रेत सैनिक भी सूर्य के शरीर की तरफ रवाना हो चुका था-

अब देखना सिर्फ यह था कि कौन सी आत्मा सूर्य के शरीर पर पहले कब्जा जमा पाती है-

और इससे जीत बोर्डेलो की गुलाम आत्मा की ही हुई-
सूर्य उठा तो सही, लेकिन अब वह सूर्य नहीं, कुछ और ही बन चुका था-
बोर्डेलो की चाल कामयाब हो चुकी थी-
ये क्या हो गया सूर्य को?
ये सब इस लड़की का किया-धरा है डोगा! ये नहीं चाहती कि सूर्य ठीक हो!
ये झूठ बोल रहा है डोगा! ये खुद नहीं चाहता कि तुम इसके शिकंजे के बाहर निकलो! इसको खत्म कर दो तो सूर्य अपने आप ठीक हो जाएगा!
बोर्डेलो ठीक कह रहा है! क्योंकि मैंने खुद अपनी आँखों से देखा है कि लोरी के वार से ही सूर्य का रूप बदल गया है!

और अब अगर ये सूर्य को ठीक नहीं करेगी तो खुद भी ठीक नहीं रहेगी!
तड़तड़तड़
ओह! इस शैतान की चाल कामयाब हो रही है! अब मैं डोगा और सूर्य के साथ लड़ने में व्यस्त रहूंगी और ये शैतान अपना काम करता रहेगा!
अब मुझे उसको बुलाना पड़ेगा, जिसको मदद के लिए मैं यहां पर लेकर आई थी!
ध्रुव!
यस, लोरी!
...लेकिन इस रूप में तुम बोर्डेलो जैसी शैतान आत्माओं से भी निपट सकते हो! तुम कचरे में घुसे बोर्डेलो को अपने गुलामों के शरीरों को जोड़ने से रोको, तब तक मैं डोगा और सूर्य से निपटती हूं!
पर जरा जल्दी करना! बोर्डेलो का अगर यह कचरे का शरीर नष्ट हो गया तो मुझे उसकी गुलाम आत्मा को सूर्य के शरीर से बाहर निकाल-कर सूर्य को ठीक करने का मौका मिल जाएगा!
ठीक है लोरी!
तुम्हारे मानस रूप के एक अंश को मैं जिस काम के लिए लेकर आई थी, उसको करने का वक्त आ गया है!...
...तुमको इस रूप में लाने का आइडिया मुझे नागराज के मानस रूप को देख-कर मिला था! वैसे तो मैं तुम्हारे इस रूप को सलाह देने के लिए लाई थी...

इस लड़की में अजीब- अजीब शक्तियां हैं! अब वह इंसानी मानस रूप से हम पर हमला कर रही है! लेकिन हम अनेक हैं और ये सिर्फ एक! ये सफल नहीं हो पाएगा!
कई आत्माओं की सम्मिलित शक्ति का वार था वह-
ध्रुव का मानस रूप तड़प उठा! और उसके तड़पने के साथ ही-
वहां से दूर, नागद्वीप की तरफ बढ़ता ध्रुव भी अचेत होने लगा-
ओफ्! अब तुमको क्या हुआ ध्रुव?
संभालो अपने आपको! हम नागद्वीप के पास पहुंच चुके हैं! लेकिन तुमको अभी यह बताना बाकी है कि वहां पहुंचकर हम करेंगे क्या?
म... मैं अपने आपको संभालने की कोशिश कर रहा हूं नागराज! नागद्वीप तक... पहुंचते... पहुंचते मैं ठीक हो जाऊंगा! आऽऽऽह!

मुंबई के 'लैंडफिल एरिया' में मौजूद ध्रुव के मानस रूप ने अपनी प्रबल इच्छा शक्ति के बल पर अपने आपको संभाल लिया था-
इस कूड़े के ढेर को नष्ट करना ही होगा! लेकिन कैसे? इस मानस रूप में तो मैं इसको छू भी नहीं पा रहा हूं!
वैसे तो कूड़े के ढेर को आग लगाकर नष्ट किया जाता है! लेकिन इस रूप में मैं आग लगाऊं तो कैसे? अब तो मुझको अपनी विवशता पर गुस्सा आ रहा है!
ध्रुव के मानस रूप को गुस्सा आने पर-
उसके मानस शरीर से जो तेज विचार तरंगें निकलीं, उनमें गजब की गर्मी थी-
कचरे के ढेर से बनी वह आकृति तुरंत लपटों में घिर गई-
वाऊ! गुस्से में काफी गर्मी होती है! सचमुच इंसान को गुस्सा नहीं करना चाहिए! खैर, मेरा काम तो हो गया! ...
... ये कचरा दैत्य खत्म... अरे! आग बुझ रही है!
इस गीले कचरे में आग नहीं लग सकती लड़के!
अब तैयार हो जा तड़पने के लिए!
जल्दी करो ध्रुव! मैं मुसीबत में हूं!
क्योंकि मेरे वारों को तो सूर्य संभाल ले रहा है! पर डोगा के वारों से बचना मेरे लिए मुश्किल हो रहा है!

ध्रुव के पास खुद ज्यादा वक्त नहीं था-
आऽऽऽ ह! अब इस कचरे के ढेर को कैसे नष्ट करूं? अगर इस मामूली कचरे के शरीर को मैं नष्ट नहीं कर पा रहा हूं, तो अगर ये अपने शरीर को लोहे के टुकड़ों या मलबे के ढेर से बनाता तो मैं क्या करता? ऐसा ये कर सकता था! पर इसने अपने शरीर को कचरे से ही बनाया! पर क्यों?
और ऐसा करने के लिए मुझे सिर्फ थोड़ा सा गुस्सा करना पड़ेगा!
D.D.T
ध्रुव के सिर से क्रोध की जो गरम तरंगें निकलीं-
उन्होंने उस ट्रक के पिछले टायर की रबर को पिघला डाला! ट्रक उल्टा-
और ट्रक के पीछे भरा हुआ वह पाउडर का पहाड़ बोर्डेलो के कचरे के शरीर पर आ गिरा-
हा हा हा! तेरी योजना नाकाम रही लड़के! तू मुझ पर इस वाहन में भरा ज्वलनशील पदार्थ गिराना चाहता था ताकि मैं आसानी से जल सकूं! लेकिन ऐसा नहीं हुआ! अब... मैं... मैं... मैं... अक!
समझा! अब मैं समझा कि अतृप्त आत्माओं ने कचरे को ही शरीर बनाने के लिए क्यों चुना! और अगर मैं सही समझा हूं तो इस कचरे के शैतान को नष्ट भी किया जा सकता है!
आऽऽऽह!

...ये शैतान जीवित वस्तुओं की मदद से ही शरीर बना सकते होंगे! वर्ना ये लोहे या पत्थर जैसी और मजबूत चीजों से अपना शरीर बनाते! ये ख्याल आते ही मैंने कीटाणुनाशक डी. डी. टी. से भरा हुआ ट्रक कचरा दानव पर पलट दिया! और कीटाणु मर गए! अब कचरे के ढेर में जब जिन्दा चीज रही ही नहीं हो तो शैतानों के लिए वह शरीर भी बेकार हो गया!

लेकिन मुसीबत खत्म होने के बजाय और बढ़ गई है! बोर्डेलो को अपना शरीर मिल गया है! अब वह और शक्तिशाली हो जाएगा, और न जाने कैसी आफत ढाएगा!

इसके बारे में भी सोचेंगे लोरी, लेकिन अभी मुझको अपने दिमाग में वापस जाना है!

तुम किससे बात कर रही हो, लोरी? अपने प्रेत मित्रों से?
नहीं! ध्रुव से!
ध्रुव! वो तो मुझे कहीं नजर नहीं आ रहा है!
वह इसलिए क्योंकि वह अपने मानस रूप में है! बल्कि था! अब वह चला गया है!
वैसे तुमने मुझे माफ तो कर दिया न लोरी! शैतान ने सचमुच मेरा दिमाग खराब कर दिया था, तभी मैंने तुम पर हमला किया!
अब छोड़ो इन बातों को बोंगा! और मुझे ये बताओ कि मैं बोर्डेलो की योजना को कैसे नष्ट करूं?
पहले ये तो बताओ कि ये सब चक्कर क्या है? ध्रुव है पर दिखता नहीं! कूड़े के ढेर में बोर्डेलो नाम की आत्मा घुस जाती है! तुम एकाएक न जाने कहां से आ टपकती हो! ये सब क्या हो रहा है?
मैं टपकी नहीं, साधना शक्ति की मदद से महानगर से मुंबई आई थी। बोर्डेलो की शैतान आत्माओं की टोली का आभास पाकर! सुनो, मैं तुमको पूरा किस्सा सुनाती हूं!
लोरी का किस्सा शुरू हो रहा था-
और ध्रुव तथा नागराज का किस्सा खत्म होने वाला था-
हम नागद्वीप पहुंच चुके हैं ध्रुव!
पूरे नागद्वीप को नागुकि का सामना करने के लिए बुला लो, नागराज!

नागराज को किसी को भी बुलाने की आवश्यकता नहीं पड़ी-
कंकाल कालदूत और उस विचित्र सर्प नागुकि को देखकर वैसे भी पूरा नागद्वीप अपने अस्त्रों-शस्त्रों सहित तट पर आ धमका था-
अच्छा ख्याल है तुम्हारा ध्रुव! अगर पूरा नागद्वीप एक साथ नागुकि पर हमला करेगा तो शायद हम इस पर विजय पा सकें!
हमला करो!
नहीं, नागराज! इस मुसीबत का हल युद्ध नहीं शांति है!...
सबसे कहो कि अपने-अपने हथियार डाल दें! और नागद्वीप का सम्राट होने के नाते...

...तुम नागद्वीप का सिंहासन नासुकि के हवाले कर दो!
ये क्या कह रहे हो ध्रुव? और... और मैं चाहूं तो भी ऐसा नहीं कर सकता! मैं नाम का सम्राट हूं। कार्यकारी शासक तो विसर्पी है!
तो तुम ऐसा करो विसर्पी!
लेकिन उसके लिए मुझे राजदंड को इसके हाथों में सौंपना पड़ेगा!
और एक बार राजदंड इसके हाथों में जाने के बाद ये हमारी किस्मत का मालिक बन जाएगा!
तुम्हारी योजना खतरनाक है ध्रुव!
यही एकमात्र तरीका है विसर्पी! मुझ पर भरोसा रखो और जाकर राजदंड लाओ!
पर... पर ये है कौन? और इसको मैं शासक क्यों बनाऊं?
ये तुम्हारे नागद्वीप का सदियों पुराना दुश्मन है विसर्पी! और अगर तुमने खुद इसको शासक नहीं बनाया तो ये नागद्वीप का विनाश कर देगा! और इसको रोकने के लिए इस बार महात्मा कालदूत भी मौजूद नहीं हैं!
लेकिन राजदंड इसके हाथों में सौंपकर होगा क्या?
ये तुम खुद ही देख लेना! पहले जल्दी जाओ!
और राजदंड लेकर आओ!
ठीक है!
नासुकि इस पुरानी जगह को पहचान गया था! और यहां पर विनाश फैलाने की उसकी इच्छा फिर से जोर मारने लगी थी-
हा हा हा! अब मैं वह काम पूरा करूंगा, जो सदियों पहले अधूरा छूट गया था!
उसकी आवश्यकता नहीं है नासुकि!

मैं राजकुमारी विसर्पी, नागद्वीप की कार्यकारी शासक इस राजदंड के माध्यम से नागद्वीप का शासन तुम्हारे हवाले करती हूं!
ये... ये चमत्कार कैसे हो गया? क्या ये मुझसे इतना डर गए हैं कि बिना किसी प्रतिरोध के राज्य मुझको सौंप रहे हैं!
खैर, मुझे क्या? मुझे तो अपनी सदियों पुरानी इच्छा पूरी करनी है! हा हा हा, लाओ राजदंड मुझे दो!
हा हा हा! मैं नागों का राजा बन गया! नहीं, नहीं, सम्राट बन गया! हा हा हा हा हाSSS
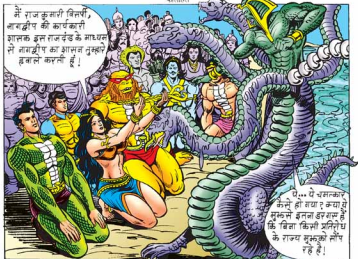
आऽऽऽह!
अरे! नासुकि तो मृत होकर नीचे गिर गया है!
और अब इसका शरीर भी अपने-आप नष्ट हो रहा है। ये चमत्कार कैसे हुआ ध्रुव?
मैंने अंधेरे में तीर छोड़ा था नागराज! लेकिन वह सही निशाने पर लगा! दरअसल आत्माएं अतृप्त होकर सिर्फ इसीलिए घूमती रहती हैं क्योंकि उनकी कोई बड़ी इच्छा अधूरी रह जाती है। नासुकि की इच्छा नागद्वीप पर राज करने की थी! जो अधूरी रह गई थी, और इसीलिए इसकी आत्मा भटक रही थी! अब इसकी वह इच्छा पूरी हो गई तो इसकी आत्मा भी आजाद हो गई!
ग्रेट आइडिया ध्रुव! जितना आसान आइडिया था उतना ही प्रभावकारी भी था!
नासुकि के नष्ट होते ही महात्मा कालदूत और सौडांगी तथा शीतनाग कुमार भी सामान्य हो गए हैं!
लेकिन अभी हमने सिर्फ एक पड़ाव पार किया है। हमने सिर्फ उस अड़चन को दूर किया है जो हमको महानगर में रोके हुए थी!
मुझे पता है ध्रुव! हमको अभी ये पता करना बाकी है कि नासुकि को भेजकर हमको रोकने के पीछे ड्रेकुला का क्या मकसद था!

तुम दोनों भी वहां पर पहुंचो! ड्रैकुला को रोकने के लिए हमको सम्मिलित शक्ति की आवश्यकता है!

ओह! इसीलिए उसने हमको महानगर में रोके रखने के लिए वासुकि को भेजा था, ताकि हम दिल्ली जाकर उसके काम को बिगाड़ न पाएं!

हमको ड्रैकुला का शरीर वापस हासिल करने से रोकना होगा! इस वक्त ड्रैकुला कहां है?

ड्रैकुला बेसब्री से अपने शरीर का इंतजार कर रहा था-

वे दोनों अब तक आए क्यों नहीं? शायद उनको मेरा शरीर ढूंढने में वक्त लग रहा है! खैर, जो भी हो, देर से सही वे आएंगे तो हैं ही! आएंगे कहां?

तब तक मैं इंतजार कर लेता हूं!

लेकिन इतनी जल्दी हम वहां पर पहुंचेंगे कैसे?

मैं तुमको वहां पर भेजूंगा और पूरी परिस्थिति पर नजर भी रखूंगा! अगर जरूरत पड़ी तो मैं खुद भी वहां पर पहुंच जाऊंगा!

ड्रैकुला यह नहीं जानता था कि उसका शरीर लाने वालों को अपने शरीरों को ही सही-सलामत लावे से बाहर लाना मुश्किल हो गया था-
आऽऽऽह! मेरा सूट धीरे-धीरे गर्म हो रहा है शक्ति! और इसके कोई भी इलैक्ट्रिक यंत्र काम नहीं कर रहे हैं। मैं यहां से बाहर निकलने के लिए अपनी किसी भी शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकता!
मेरे पास सिर्फ ज्वाला वार हैं! और वे इस प्राणी प्लाजला को कमजोर करने के बजाय और शक्तिशाली बना देंगे! आऽऽऽह!

अब तुमको क्या हुआ शक्ति?
मेरे ज्वाला से बने हुए अंग भी गलने शुरू हो गए हैं! प्लाजला हमको पचा रहा है परमाणु!
'ऊर्जा कवच' बनाने में काफी शक्ति लगती है और इसमें काफी ऊर्जा खर्च भी होती है!
ऊर्जा कवच के अंदर हम कुछ समय के लिए बच तो सकते हैं लेकिन बाहर नहीं निकल सकते!
मेरा सूट भी गलना शुरू हो गया है!
लेकिन... लेकिन, 'ऊर्जा खोल' में कैद ड्रैकुला का शरीर सुरक्षित है। हम 'ऊर्जा खोल' में सुरक्षित रह सकते हैं शक्ति!
और ऐसा करके मैं अपनी सारी ऊर्जा खर्च दूंगी और फिर हम दोनों को खत्म होने में सिर्फ एक पल लगेगा!

अगर हम यहीं गलकर खत्म हो गए तो फिर तुम्हारी ऊर्जा किस काम आएगी शक्ति?

तुम ठीक कह रहे हो परमाणु! मैं इस ऊर्जा कवच का आकार बढ़ाती हूं! शायद इसका दबाव प्लाजला का शरीर फाड़ डाले!

लेकिन-

ओऽऽऽह!

अब मेरी ऊर्जा खत्म हो रही है! लेकिन मेरे ऊर्जा कवच का दबाव इसके प्लाज्मा के शरीर को फाड़ नहीं पा रहा है!

शक्ति का ऊर्जा कवच प्लाजला के शरीर के अंदर से गैस की तरह भरने लगा-

और प्लाजला के शरीर में अंदर से दबाव पड़ने लगा-

अगर किसी तरह कुछ पलों के लिए भी इसके शरीर का तापमान जरा सा भी कम हो सकता तो इसके शरीर का प्लाज्मा कमजोर पड़ जाता!

और फिर मेरा ऊर्जा कवच इसका शरीर फाड़ डालता!

लेकिन मेरे पास सिर्फ ऊष्मा पैदा करने की शक्ति है, इसको कम करने की नहीं!

ऐसी शक्ति तो मेरे पास भी नहीं है शक्ति!

और अगर होती तो भी सारे यंत्र खराब होने के कारण मैं उसका प्रयोग नहीं कर पाता!

इस लावे के सागर में तुम तापमान कम कैसे करोगे परमाणु?

अपने ऑक्सीजन टैंक की मदद से!

जब ये टैंक फटेगा तो कुछ पलों के लिए 'कूलिंग इफेक्ट' पैदा हो जाएगा!

लेकिन ऑक्सीजन नष्ट होने के बाद अब मैं सिर्फ तुम्हारे 'ऊर्जा कवच' के कारण जिन्दा हूं! और इसमें सांस लेने लायक ज्यादा हवा नहीं है। अक्!
आग के संपर्क में आते ही ऑक्सीजन टैंक फ्य-
और प्लाजला के शरीर के उस हिस्से की प्लाज्मा सतह के कमजोर पड़ते ही शक्ति के ऊर्जा कवच ने उस हिस्से को रबर की झिल्ली की तरह फाड़ डाला-
और उस गैस के संपर्क में आने वाली प्लाजला के शरीर की पर्त ठंडी होने लगी-
ओह! परमाणु होश खो चुका है! और अब मेरे पास भी ज्यादा वक्त नहीं है। क्योंकि मेरे पास इतनी कम ऊर्जा बची है जो परमाणु को ज्यादा देर तक सुरक्षित नहीं रख सकती!
मुझे प्रकाश की गति से उड़कर लावे के बाहर निकलना होगा!
और परमाणु को ज्वालामुखी के बाहर की स्वच्छ वायु में पहुंचाना होगा!
शक्ति का ड्रैकुला पर ध्यान ही नहीं था-

वह तो यह भी भूल चुकी थी कि उसको ड्रैकुला के शरीर में हलाहल विष की एक बूंद टपकानी थी।
शाबाश शक्ति और परमाणु! मुझे पता था कि मेरा काम विज्ञान ही कर सकता है!
अब तेरा ये कमजोर सा कवच मुझे मेरे शरीर तक पहुंचने से रोक नहीं पाएगा।
ला, दे दे मुझको मेरा शरीर!
शक्ति, ड्रैकुला को सुन भी सकती थी और समझ भी सकती थी-
लेकिन उसको रोकने के लिए वह कुछ नहीं कर सकती थी-
लेकिन ड्रैकुला को रोकने वाले और भी थे-
आक्! मेरी आत्मा तक को रोकने की शक्ति किसमें है?
बार-बार एक ही सवाल मत पूछा करो ड्रैकुला। वैसे भी तुमको रोकने की शक्ति यहां पर मौजूद हर शख्स में है!
अक्! मेरा शरीर सामने है...
...लेकिन मैं उस तक पहुंच ही नहीं सकता! ओह!

तड़पते ड्रैकुला के जख्मों पर नमक पड़ना अभी बाकी था-
क्योंकि तभी आकाश में-
तू हार गया ड्रैकुला! और बोर्डेलो जीत गया! बोर्डेलो को अपना शरीर मिल गया है!
अब बोर्डेलो जा रहा है मृत्युलोक का प्रेत-नायक बनने! पीछे-पीछे तू भी आ जाना मेरी गुलामी करने के लिए!
शरीर तो मुझको भी मिल गया है, बोर्डेलो! सिर्फ मुझे उस पर कब्जा करना बाकी है!
रुक जा बोर्डेलो! इंतजार कर! धोखा मत कर मेरे साथ!
बोर्डेलो!
ओफ़, चला गया बोर्डेलो! और उसके साथ-साथ मृत्युलोक का राज्य भी मेरे हाथों से चला जाएगा!
ऐसा नहीं होने देगा ड्रैकुला! ड्रैकुला अपना शरीर हासिल करके सामना करेगा बोर्डेलो का!
अपना शरीर हासिल करने से कोई नहीं रोक पाएगा ड्रैकुला को!
सिंधौरा!

वहां से सैकड़ों किलोमीटर दूर- दिल्ली में शीना के शरीर में मौजूद सिंधोरा तुरन्त समझ गई कि उसका स्वामी क्या चाहता था-
उसने शीना के शरीर में मौजूद शक्तियों को उसके चरम पर पहुंचाना शुरू कर दिया-
शीना की शक्तियां दिल्ली से कई किलोमीटर की दूरी पार करते हुए-
हवाई द्वीप के ज्वाला मुखी तक जा पहुंची-
और अचानक ही चारों तरफ धमाके होने लगे-
इससे पहले कि आश्चर्य-चकित सुपर हीरोज कुछ समझ पाते-
ड्रैकुला अपने शरीर पर कब्जा पा चुका था-
हा हा हा! अब ये शरीर कणों में बदलकर हमेशा मेरे साथ रहेगा! अब इसमें न तो कोई क्रॉस धंसा पाएगा और न ही कोई तंत्र-मंत्र चला पाएगा!
और अब मैं चला...

...मृत्यु लोक! क्योंकि मुझको वहां पर जाकर बोर्डेलो से अपना पुराना हिसाब चुकता करना है! मैं उसकी ड्रैकुला के समूल नाश की अधूरी इच्छा को कभी पूरा नहीं होने दूंगा!

किसी के भी रोक पाने से पहले ड्रैकुला मृत्यु लोक वापस जा चुका था-

लेकिन आत्मा तो अनश्वर होती है! उसको तो न काटा जा सकता है न जलाया जा सकता है और न ही गलाया जा सकता है! फिर ड्रैकुला की आत्मा को हम भला नष्ट कैसे कर सकते हैं!
आत्मा को खत्म करने का एक ही तरीका है लोरी! उसको परमात्मा से मिला दो! उसको मोक्ष दिला दो!
और मोक्ष कैसे दिलाओगे?
उसकी अधूरी इच्छा को पूरी करके!
"उसके राज्य के उस हिस्से को आजाद करके जो अभी बोर्डेलो के वंश के कब्जे में है, और जहां पर रहने वाली ड्रैकुला की प्रजा उनकी गुलाम है-"
क... कौन हैं आप लोग? क्या चाहते हैं हमसे? आप रवते तो गुलाम रूमानियों से हैं लेकिन रूमानिया के वासी नहीं लगते!
हम हिन्दुस्तान से आए हैं! तुम लोगों को आजादी दिलाकर काउंट ड्रैकुला का सपना पूरा करना चाहते हैं हम!
आ... आप हमें डूर्लो से मुक्ति दिलाने आए हैं! हाहाहा! डूर्लो से हमको मुक्ति सिर्फ एक इंसान दिला सकता है!... खुद डूर्लो!

ऐसा क्या है डुर्रेलो में?
डुर्रेलो कई शैतानी शक्तियों का मालिक है! और कहते हैं कि आज भी काउंट ड्रैकुला के जानी दुश्मन बोर्डेलो की आत्मा अपने परपोते के परपोते डुर्रेलो की रक्षा करती है! डुर्रेलो को राजगद्दी से हटाना तो दूर, उस तक पहुंच पाना ही असंभव है!
और अगर तुम असफल रहते हो डुर्रेलो हम जैसे बचे खुचे ड्रैकुला के स्वामिभक्तों को तुम्हारा साथ देने के जुर्म में बेदर्दी से मार डालेगा!
हम तुम्हारा साथ तभी दे सकते हैं जब तुम हमको अपनी शक्तियों का सबूत दो!
फिर भी अगर आप लोग हमको डुर्रेलो तक पहुंचने का रास्ता दिखाएं तो हम कोशिश जरूर कर सकते हैं!
और अगर डुर्रेलो शैतानी शक्तियों का स्वामी है तो हमारे पास भी उससे निपटने लायक शक्तियां हैं!
बकुला!
ये ड्रैकुला के मुख्य सेनापति रहे फोरोला का वंशज है! आज भी ये डुर्रेलो के कोप से हमारी रक्षा करता है! तुम अगर इससे बच गए तो हम तुमको डुर्रेलो तक पहुंचने का रास्ता बता सकते हैं!
कड़...च
ओफ्!
ये दैत्याकार मानव तो पत्थर तक को चबा जाता है!

सिर्फ चबाता ही नहीं है, बल्कि उनके टुकड़ों को धमाके के साथ गोलियों की तरह हम पर दाग भी रहा है!
धड़म
धड़ाम
ध्वनि प्रदूषण मुझे पसन्द नहीं...
...इसीलिए मुझे इसका शोर करने वाला मुँह बन्द करना ही पड़ेगा!
तुम इसकी आवाज गायब करो...
...और मैं इसके होश गायब करता हूं!
और मैं इसकी आजादी!

आश्चर्यजनक! ऐसी शक्तियां हमने पहले कभी नहीं देखीं! हमको विश्वास हो गया है कि शायद स्वयं ईश्वर ने तुम लोगों को हमारी मदद के लिए भेजा है! परन्तु तुम हिन्दुस्तान-वासी हमको आजादी क्यों दिलाना चाहते हो?

क्योंकि हम गुलामी का स्वाद अच्छी तरह से जानते हैं! और सच तो यह है कि बगैर आप लोगों को इस गुलामी से मुक्ति दिलाए हमको भी अपनी गुलामी से मुक्ति नहीं मिलेगी!

ड्रैकुला की गुलामी से!

हमको तुम्हारी बातें पूरी तरह से समझ में नहीं आईं! लेकिन चलो, अब समय खराब नहीं करना चाहिए!

क्योंकि इस पूरे इलाके पर डुर्रेलो की सेना की नजर गड़ी रहती है!

पता नहीं तुम लोग उनकी नजरों से बच-कर यहां तक कैसे आ पहुंचे?

जो जहां पर है वहीं रुक जाए! वर्ना भून दिए जाओगे!

और शैतान का नाम लो और शैतान हाजिर!

अब पीछे-पीछे टैंक भी आते होंगे! अब हम कहीं नहीं जा सकते!

जा सकते हैं! अब हमको कोई भी नहीं रोक सकता! डोगा जमीन के टैंकों को संभालेगा और परमाणु हवा में उड़ते जहाजों को!

और हमारा रास्ता साफ हो जाएगा!

आप हमारे साथ आइए! और डुर्रेलो तक पहुंचने का रास्ता दिखाइए!

पर मेरे पास ज्यादा गोला-बारूद नहीं है!

गोला-बारूद हमारे पास बहुत है!...

...आज तक हमारे पास इनको इस्तेमाल करने की हिम्मत नहीं थी! पर अब है! हम तुम्हारे साथ लड़ेंगे डोगा!

डोगा और परमाणु ने दुर्रेलो की बढ़ती सेना का रास्ता रोक लिया था-

और नागराज, ध्रुव, शक्ति और तोरी को ड्रैकुला के स्वामिभक्तों के साथ आगे बढ़ने का मौका मिल गया था-
इधर से आओ! यहां से एक गुप्त सुरंग डुर्रेलो के महल के अंदर तक जाती है! इसका पता हमारे अलावा सिर्फ सांपों, चूहों और छिपकलियों को ही मालूम है!
योजना तो डुर्रेलो को असावधान हालत में पकड़ने की थी-
लेकिन डुर्रेलो असावधान नहीं था-
डुर्रेलो के महल में-
मालिक कुछ विदेशी, 'गुलाम रुमानिया' में घुसकर ड्रैकुला की प्रजा को बगावत के लिए उकसा रहे हैं! हमने वायु सेना और टैंकों की टुकड़ियां वहां भेज दी हैं! लेकिन उन विदेशियों में गजब की शक्तियां हैं! टैंक और हैलीकॉप्टर भी उनसे निपट नहीं पा रहे हैं!
ये हमको मालूम है! लेकिन तुमको ये मालूम नहीं है कि कुछ विदेशी अब हमारे महल की तरफ बढ़ रहे हैं!
क्या? मैं तुरन्त सेना की तीन टुकड़ियों को उनको रोकने के लिए भेजता हूं!
कोई फायदा नहीं है! वे विदेशी हर टुकड़ी के टुकड़े-टुकड़े कर देंगे! उनको रोकने का दूसरा इंतजाम करना होगा!
हमारी मित्र प्रेतात्माओं को जगाओ!

डुर्रेलो के महल की तरफ बढ़ते सुपर हीरोज के कदम एकाएक थम गए-
आऽऽऽह! अब हम कुछ नहीं कर सकते! मैंने कहा था कि डुर्रेलो भयानक आत्माओं को भी मदद के लिए बुला सकता है! इनको पार करके जाना असंभव है!
ये भयानक आत्मायें मामूली सी भी 'सत्य-शक्ति' का सामना नहीं कर सकतीं, श्रीमान!
इन आत्माओं का आना यह बताता है कि डुर्रेलो को हमारे आने की सूचना मिल चुकी है! अब समय व्यर्थ नहीं करना चाहिए! मैं और शक्ति इन आत्माओं को रोकते हैं ध्रुव! तुम और नागराज इन लोगों के साथ आगे बढ़ते रहो! डुर्रेलो के संभलने से पहले ही उसका अंत कर दो!
ठीक है लोरी!

डुर्रेलो ने एक लीवर दबाया-

और सुरंग में एक सैलाब आ गया-

ये क्या है? पानी! डुर्रेलो ने सारा इंतजाम करके रखा है! लेकिन वह ये नहीं जानता कि हम चूहे नहीं हैं जो पानी में डूबकर मर जाएं!

ये पानी नहीं है, नागराज! हवा में फैल रही खट्टी महक को सूंघो और चट्टानों से धुएं को उठते हुए देखो!

ये एसिड है! अम्ल की बाढ़ है यह! जो हमको पलभर में गला देगी! ये तो अच्छा हुआ कि रास्ता पता चल जाने के बाद हम ड्रैकुला के स्वामिभक्तों को बाहर ही छोड़ आए थे!

हे भगवान! अब तो मैं भी कुछ नहीं कर सकता! इच्छाधारी कणों में मैं सिर्फ तीन पलों तक रह सकता हूं! उससे काम चलेगा नहीं और आत्माओं से भरे इस क्षेत्र में मैं मानसरूप में आने का खतरा नहीं उठा सकता!

आसान रास्ते खत्म हो चुके थे। और अब मुसीबतें अपना सिर उठा रही थीं-
ओफ़! एंटी टैंक मिसाइलें खत्म हो चुकी हैं! और अभी भी दो टैंक बचे हुए हैं!
बूम
हम नदी में कूद कर बच सकते हैं!
नहीं डोगा! नदी मगरमच्छों से भरी हुई है! उसमें जाने का मतलब है आत्महत्या करना!
अब मेरे पास सिर्फ डायनामाइट की कुछ रॉडस बची हैं! ये टैंक पर असर नहीं डाल पाएंगे!
फिर हम क्या करें?
इन डायनामाइट रॉड्स का इस्तेमाल दूसरी तरह से करना होगा!
ये क्या कर रहे हो डोगा? टैंक तो उधर है! डायनामाइट को यहां पर दबाकर इसको व्यर्थ क्यों कर रहे हो?
देखते जाओ!
बड़ाम
कुछ ही पलों बाद जगह-जगह पर दबी डायनामाइट रॉड्स में जब विस्फोट हुआ तो एक गहरी दरार बन गई-
और उस दरार से होता हुआ नदी का पानी तेजी से टैंकों की तरफ बढ़ा-

विस्फोटों के कारण ढीली हो गई मिट्टी जब पानी के साथ मिली तो एकाएक जमीन दलदली बन गई-
और दोनों टैंक उस दलदल में धंसकर फंस गए-
यस!
अब सैनिकों के पास आत्म-समर्पण के अलावा और कोई चारा नहीं था-
लेकिन परमाणु के लिए मुश्किलें थोड़ी सी बढ़ गई थीं-
क्योंकि नष्ट हुए हैलीकॉप्टरों की जगह अब फाइटर जेट्स ने ले ली थी-
टैंक रेजीमेंट काबू में आ चुकी थी-
तड़तड़ तड़तड़ तड़तड़तड़
तड़तड़तड़ तड़तड़
आSSS ह! इनकी तेज गति के कारण मेरे निशाने सही नहीं लग रहे हैं!
आSSS ह!
अभी ये गोलियों से सिर्फ घायल हुआ है!
इस पर 'हीट सीकिंग मिसाइल' दागकर इसको खत्म कर दो!

अब ये मिसाईल... अरे! मेरे कंट्रोल काम क्यों नहीं कर रहे हैं? लग रहा है जैसे मेरा प्लेन अपने आप चल रहा है!

मेरा भी! हम दोनों के प्लेन साथ-साथ और पास-पास उड़ रहे हैं! और अब मिसाइल भी हमारी तरफ आ रही है। पर क्यों?

क्योंकि इस वक्त दोनों प्लेन जेट की पॉवर से नहीं, परमाणु पॉवर से चल रहे हैं! और ये मिसाईल मुझे ढूंढ़ती हुई इधर आ रही है!

इजेक्ट!
वायुसेना को भी परमाणु ने ध्वस्त कर दिया था-
डुर्रेलो की मित्र प्रेतात्माओं को भी सदियों में पहली बार पिटाई का स्वाद चखना पड़ रहा था-
लेकिन ध्रुव और नागराज की मुश्किलें खत्म नहीं हुई थीं-
ओफ! ऐसे हम कहां तक भागेंगे! देर-सवेर ये एसिड की बाढ़ हमको वहां ही ले जाएगी!
इस एसिड ने छत से लटकती पेड़ों की जड़ों तक को गला डाला है! और उनसे टपकते दूध ने हमारे बदन पर टपक-टपक कर हमारी परेशानी को और बढ़ा दिया है!
लेकिन इस दूध की एसिड से प्रतिक्रिया नहीं हो रही है! हम बच सकते हैं नागराज! इस दूध को अपने शरीर पर टपकने दो! पूरे शरीर को चिपचिपे दूध से ढक जाने दो!
समझ गया ध्रुव!

... तुम दोनों बच कैसे गए? खत्म कर दो इन दोनों को!

हमको खत्म करने की नहीं, बल्कि अपने बचने की सोचो, डुर्रैलो!
तुम्हारे ड्रैकुला की प्रजा पर राज्य करने के दिन खत्म हो चुके हैं! या तो खुद ड्रैकुला के प्रजावासियों को सत्ता सौंपकर यहां से चले जाओ, वर्ना हम तुमको भगाने पर मजबूर हो जाएंगे!
नहीं! ऐसा नहीं होगा! मेरी सेना और मेरी मित्र प्रेतात्माएं तुमको धूल में मिला देंगी!
तुम्हारी टैंक-रेजीमेंट खत्म हो चुकी हैं डुर्रैलो!
और तुम्हारी 'एयर फोर्स' के भी टुकड़े-टुकड़े हो चुके हैं!
तुम्हारी मित्र प्रेतात्माएं हमसे इतनी पिटी हैं कि अब वे तुम्हारी दुश्मन हो चुकी हैं!
नहीं!
ये 'गुलाम रूमानिया' सदियों से हमारे कब्जे में है! मैं इसको कभी नहीं छोड़ूंगा! कभी नहीं!
बोर्डेलो! बोर्डेलो, मेरी पुकार सुनिए! आकर अपने राज्य को बचाइए!

मृत्युलोक में ड्रैकुला की आत्मा के साथ उलझा हुआ वोर्डेलो अपने वंशज की पुकार सुनकर चौंक उठा-
रुक जा! रुक जा ड्रैकुला! रोक दे ये लड़ाई! मेरा दुर्रेलो मुझे मदद के लिए बुला रहा है!
जाना है तो मृत्युलोक के सिंहासन पर अपना दावा छोड़ दे, और मैं तुझसे लड़ना छोड़ दूंगा!
जानता है दुर्रेलो मुझे मदद के लिए क्यों बुला रहा है? तेरे प्रजावासियों ने बगावत कर दी है! और ऐसा उन्होंने तेरे दुश्मन सुपर हीरोज़ के उकसाने पर किया है!
क्यों किया है, यह मैं नहीं जानता!
ये सब तुझे कैसे पता?
दुर्रेलो की पुकार सुनकर जब मैंने ध्यान लगाया तो मुझे पलभर में सारा दृश्य दिख गया।
मेरे दुश्मन मेरे गुलाम राज्य को भला क्यों आजाद कराना चाहेंगे! इसमें जरूर उनकी कोई चाल होगी!
उनको रोकना होगा! ठीक है! हम अपनी लड़ाई बाद में पूरी करेंगे! फिलहाल हम रुमानिया जाएंगे!

दोनों महाशक्तिशाली प्रेतात्माओं ने डुर्रेलो के पास सशरीर पहुंचने में एक पल भी नहीं गंवाया-
रुक जाओ, नागराज! और आजाद कर दो डुर्रेलो को! और इससे पहले कि हम पहले तुम लोगों को और फिर मानवों को तबाह कर दें, बताओ कि ये सब तुम क्यों कर रहे हो?
जबान संभालकर हिला दुष्ट प्रेतात्मा! ध्यान रख कि यहां पर देवी काली का रूप शक्ति भी है! जो तुझे अनंतकाल के लिए अपनी ज्वाला में झुलसने के लिए छोड़ सकती है!
और जहां तक रही डुर्रेलो को छोड़ने की बात तो थोड़ी देर बाद तुझको इससे मतलब ही नहीं रहेगा! क्योंकि एक बार इसने गुलाम रूमानिया को आजाद करने की बात मान ली तो तेरी अतृप्त इच्छा पूरी हो जाएगी और तू मोक्ष पा जाएगा! तेरी आत्मा, परमात्मा का एक अंग बन जाएगी!
नहीं, ऐसा मत करना डुर्रेलो! मत मानना इनकी बात! मेरा समूल नाश मत होने देना डोर्रेलो, समझा इसे! मैं तुम्हें मृत्युलोक का राजा मानने के लिए भी तैयार हूं!

घबरा मत ड्रैकुला! तू अब बोर्डेलो की प्रजा बन गया है! और बोर्डेलो अपनी प्रजा की रक्षा करना जानता है!

डुर्रेलो! कभी मत मानना इनकी बात! ये तेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। जब तक तू अपनी जुबान से गुलाम रुमानिया पर कब्जा छोड़ने की बात नहीं कहेगा तब तक तू ही यहां का राजा रहेगा!

गलत!

कमांडर, तू! हमारा कमांडर होकर भी हमारे पूर्वज की बात को काट रहा है?

हां! क्योंकि राजा खुद कभी राजा नहीं बन सकता! प्रजा और सेना उसको अपनी सहमति देकर राजा बनाती हैं!

प्रजा तो वैसे भी तेरे खिलाफ है!

और अब सेना भी तुझको राजा मानने से इंकार करती है!

अब तक हम तुझको सिर्फ तेरी प्रेतात्माओं के डर से राजा मानते थे! लेकिन इन जांबाजों ने उनको नष्ट करके हमको भी आजाद कर दिया है! जा, प्रजा और सेना दोनों ही तुझको राजा मानने से इंकार करती हैं!

डुर्रेलो अब गुलाम रुमानिया का राजा नहीं है! गुलाम रुमानिया अब आजाद है!

ओह! मेरी आत्मा मेरा शरीर छोड़कर अपने-आप ही जा रही है! मेरा... मेरा शरीर भी मिट्टी का बनता जा रहा है! मैं हमेशा के लिए मुक्त होकर खत्म हो रहा हूं!

हा हा हा! विदा ड्रैकुला! तेरे नाश के साथ-साथ मेरी भी अतृप्त इच्छा पूरी हो गई है!

अरे! अरे, ये मैंने क्या कह दिया! पर ये तो सच था! ड्रैकुला का समूल नाश ही मेरी एकमात्र इच्छा थी! और अब वह इच्छा पूरी होते ही मेरी आत्मा भी परमात्मा से मिलने जा रही है! आऽऽह!

चलो, जो हुआ अच्छा हुआ! हमने प्लान तो सिर्फ ड्रैकुला को खत्म करने के लिए बनाया था! लेकिन साथ में बोर्डेलो जैसी आफत भी खत्म हो जाएगी, यह हमने नहीं सोचा था!
मुझे आभास हो रहा है! ड्रैकुला की आत्मा के मोक्ष पाते ही उसकी गुलाम आत्माएं भी भाग खड़ी हुई हैं! अब शीना भी सुरक्षित है, और दिल्लीवासी भी!
लेकिन क्या ड्रैकुला सचमुच पूरी तरह से खत्म हो गया है!
अभी तुम दोनों का नर्क में आने का वक्त नहीं आया है! लेकिन तुम वापस भी नहीं जा सकोगे! तुमको सदियों का इंतजार नर्क के द्वार पर ही करना पड़ेगा!
ड्रैकुला की कहानी अभी खत्म नहीं हुई है-
समाप्त.